R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

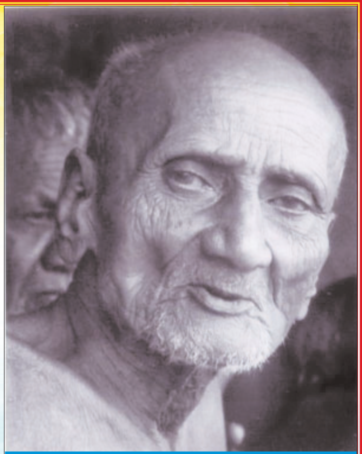

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

20/25 साल पहले और आज के युवाओं की जीवन शैली पृष्ठ 02 पर...

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 32 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 09 जून 2025, वीर नि. संवत् 2551

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

।। श्री शांति-वीर-शिव-धर्म-अजित-वर्धमान-परम्पराचार्येभ्यो नमः ।।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज

प्रथम पट्टाचार्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य 108 श्री वीरसागर जी महाराज

द्वितीय पट्टाचार्य सिद्धांत संरक्षक आचार्य 108 श्री शिवसागर जी महाराज

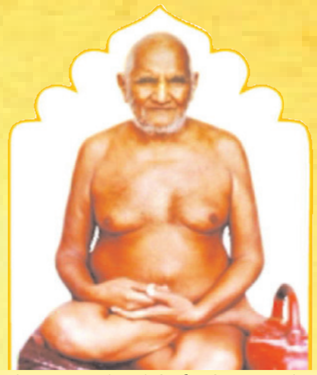

तृतीय पट्टाचार्य धर्म शिरोमणि आचार्य 108 श्री धर्मसागर जी महाराज

चतुर्थ पट्टाचार्य अभिक्षण ज्ञानपयोगी आचार्य 108 श्री अजितसागर जी महाराज

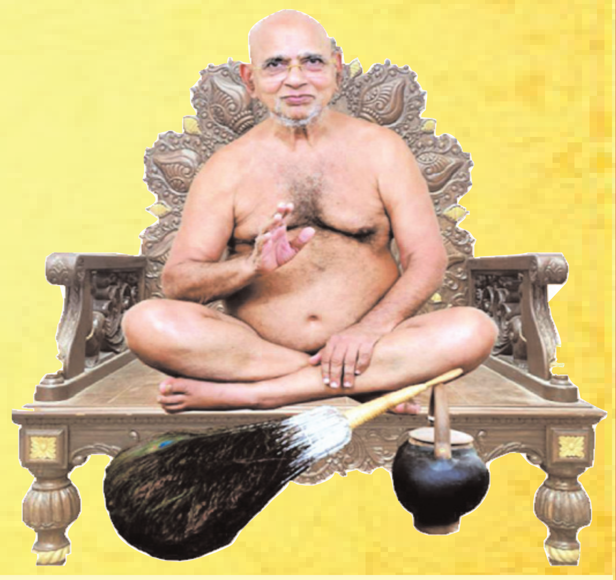

वात्सल्य वारिधि, जिनधर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव, पंचम पट्टाचार्य
108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज

बीसवीं सदी के महान दिगम्बर संत प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती परम पूज्य आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव 13 अक्टूबर 2024 से 3 अक्टूबर 2025 के उपलक्ष्य में उनके श्री चरणों में कोटि- कोटि शत् शत् वंदन, शत् शत् नमन्

पुण्यार्जक/नमनकर्ता
प्रकाशचन्द्र बड़जात्या-संतोष देवी, शैलेन्द्र- सुनीता, नीरज-निकिता एवं परिवार
श्रीनिवास रोडवेज प्रा. लि., चेन्नई/दिल्ली/कोलकाता

20/25 साल पहले और आज के युवाओं के जीवन शैली का परिवर्तन: एक तर्क संगत और प्रभावशाली विश्लेषण

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

पिछले दो दशकों में दुनिया में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं, जिसने समाज के हर पहलू को प्रभावित किया है। इस बदलाव का सबसे अधिक प्रभाव हमारे युवाओं पर पड़ा है। आज के लड़के और लड़कियाँ, जो 20/25 साल पहले के युवा थे, उनके रहन-सहन, खाने-पीने, और जीवन शैली में जमीन-आसमान का फर्क आ गया है। इस लेख में हम इन परिवर्तनों का तर्कसंगत और प्रभावशाली विश्लेषण करेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि कैसे आधुनिक वातावरण और जीवनशैली ने युवाओं की सोच और व्यवहार को प्रभावित किया है।

रहन-सहन का परिवर्तन: पारिवारिक **जीवन और संरचना:**

अतीत - 20/25 साल पहले, पारिवारिक जीवन अधिक संगठित और सामूहिक था। संयुक्त परिवार की अवधारणा अधिक प्रचलित थी, जहाँ एक ही छत के नीचे कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं। इस व्यवस्था में हर व्यक्ति का एक महत्वपूर्ण भूमिका होती थी और बच्चों का पालन-पोषण सामूहिक जिम्मेदारी माना जाता था।

वर्तमान: आज के समय में, संयुक्त परिवारों की संख्या में कमी आई है और एकल परिवार का चलन बढ़ गया है।

आधुनिक जीवन शैली और करियर की प्राथमिकताओं ने परिवार के सदस्यों को अलग-अलग शहरों और देशों में रहने के लिए मजबूर किया है। बच्चों का पालन-पोषण अब ज्यादातर माता-पिता की जिम्मेदारी हो गई है, जिससे बच्चों को स्वतंत्रता और स्वायत्तता का अधिक अनुभव होता है।

शिक्षा और तकनीकी साक्षरता: अतीत - 20/25 साल पहले, शिक्षा का माध्यम अधिकतर पारंपरिक था। किताबों, नोट्स और कक्षाओं के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। तकनीकी साक्षरता सीमित थी और कंप्यूटर तथा इंटरनेट का उपयोग सीमित था।

वर्तमान: आज की शिक्षा प्रणाली अत्यधिक तकनीकी हो गई है। ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल क्लास रूम और ई-लर्निंग प्लेटफर्म का उपयोग बढ़ गया है। युवाओं की तकनीकी साक्षरता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है और वे नई तकनीकों को जल्दी अपनाने में सक्षम हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन:

अतीत: 20/25 साल पहले, समाज और संस्कृति अधिक रूढ़िवादी थे। पारंपरिक मूल्य और रीति-रिवाजों का पालन किया जाता था और बच्चों को इन्हीं मूल्यों के तहत पाला जाता था।

वर्तमान: आज का समाज और संस्कृति अधिक उदार और खुले विचारों वाले हो गए हैं। युवाओं को स्वतंत्रता और स्वायत्तता का अधिक अनुभव होता है। वे अपने निर्णय स्वयं लेने के लिए सक्षम होते हैं और आधुनिकता की ओर झुकाव रखते हैं।

खाने-पीने की आदतों में बदलाव:

अतीत की खाद्य संस्कृति:

पारंपरिक भोजन - 20/25 साल पहले, लोगों की खाने-पीने की आदतें अधिकतर पारंपरिक और स्थानीय खाद्य पदार्थों पर आधारित थीं। घर का बना खाना और ताजे, स्वस्थ्य सामग्री का उपयोग अधिक होता था। भोजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा स्थानीय कृषि उत्पादों और मौसमी फलों तथा सब्जियों से बनता था।

सामूहिक भोजन: खाने-पीने की आदतें सामूहिक होती थीं। परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर भोजन करते थे, जिससे पारिवारिक बंधन मजबूत होते थे और एक-दूसरे के साथ समय बिताने का अवसर मिलता था।

आधुनिक खाद्य संस्कृति: फास्ट फूड और जंक फूड - आज के युवाओं की खाने-पीने की आदतें बदल गई हैं। फास्ट फूड और जंक फूड का चलन बढ़ गया है। पिज्जा, बर्गर, नूडल्स और कोल्ड ड्रिंक्स जैसी चीजें उनकी डाइट का हिस्सा बन गई हैं। इन खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।

बाहर खाने का चलन: बाहर खाने का चलन भी बढ़ गया है। युवाओं के लिए रेस्तरां, कैफे और फूड आउटलेट्स में खाना आम बात हो गई है। यह उनकी जीवनशैली का एक हिस्सा बन गया है, जिससे पारिवारिक भोजन के समय में कमी आई है।

स्वास्थ्य पर प्रभाव: जंक फूड और फास्ट फूड का अधिक सेवन करने से युवाओं के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। मोटापा, हृदय रोग और डायबिटीज जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। हालांकि, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है और कई युवा अब स्वस्थ आहार की ओर भी रुख कर रहे हैं।

स्वतंत्रता और आधुनिक जीवनशैली:
स्वतंत्रता की बढ़ती चाह:

व्यक्तिगत स्वतंत्रता - आज के युवा व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्व देते हैं। वे अपने निर्णय स्वयं लेने के लिए सक्षम होते हैं और अपने जीवन के हर पहलू में स्वतंत्रता चाहते हैं। यह स्वतंत्रता शिक्षा, करियर, रिश्ते और जीवनशैली के हर क्षेत्र में देखी जा सकती है।

सामाजिक स्वतंत्रता: सोशल मीडिया और इंटरनेट ने युवाओं को एक नया प्लेटफार्म प्रदान किया है, जहाँ वे अपनी आवाज उठा सकते हैं और अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं। यह उन्हें सामाजिक स्वतंत्रता और स्वायत्तता का अनुभव करने में मदद करता है।

आधुनिक जीवनशैली: फैशन और लाइफस्टाइल - आज के युवाओं की जीवन शैली फैशन और आधुनिकता पर आधारित है। वे नई-नई फैशन ट्रेंड्स को अपनाते हैं और अपनी लाइफ स्टाइल को अपडेट रखते हैं। यह उन्हें अपने व्यक्तित्व को व्यक्त करने और समाज में अपनी पहचान बनाने में मदद करता है।

तकनीकी जीवनशैली - तकनीक ने युवाओं की जीवनशैली को पूरी तरह बदल दिया है। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और इंटरनेट उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। वे अपनी अधिकांश गतिविधियाँ ऑनलाइन करते हैं, चाहे वह पढ़ाई हो, मनोरंजन हो, या सामाजिक संपर्क।

युवाओं की सोच और व्यवहार: शिक्षा और ज्ञान:

अतीत की शिक्षा - 20/25 साल पहले, शिक्षा का माध्यम अधिकतर पारंपरिक था। शिक्षक और किताबें ही मुख्य ज्ञान के स्रोत थे। बच्चों को जो ज्ञान दिया जाता था, वे उसे ही मानते थे और अधिक प्रश्न नहीं पूछते थे।

वर्तमान की शिक्षा: आज की शिक्षा प्रणाली में बदलाव आया है। इंटरनेट और डिजिटल मीडिया ने ज्ञान के नए स्रोत प्रदान किए हैं। युवा अब अधिक प्रश्न पूछते हैं और किसी भी विषय पर अपनी राय रखते हैं। वे नए-नए विचारों और ज्ञान की खोज में रहते हैं।

सामाजिक और नैतिक मूल्य: पारंपरिक मूल्य - 20/25 साल पहले, सामाजिक और नैतिक मूल्य अधिक स्थिर और संरचित थे। बच्चों को यह सिखाया जाता था कि वे अपने बड़ों का सम्मान करें और समाज के नियमों का पालन करें।

आधुनिक मूल्य: आज के युवा अधिक उदार और खुले विचारों वाले हो गए हैं। वे स्वतंत्रता, स्वायत्तता और समता को अधिक महत्व देते हैं। वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं और समाज में बदलाव लाने की कोशिश करते हैं।

तकनीकी प्रभाव: सकारात्मक प्रभाव - तकनीक ने युवाओं की सोच और व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। उन्हें अधिक ज्ञान प्राप्त करने, नए-नए विचारों को समझने और सामाजिक बदलाव लाने का अवसर मिला है। सोशल मीडिया ने उन्हें अपनी आवाज उठाने का प्लेटफार्म प्रदान किया है।

नकारात्मक प्रभाव: तकनीक का नकारात्मक प्रभाव भी है। सोशल मीडिया और इंटरनेट की अत्यधिक उपयोग से मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है। ऑनलाइन बुलिंग, डिप्रेशन और एंग्जाइटी जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इसके अलावा, युवाओं का वास्तविक जीवन से संपर्क कम हो रहा है और वे अधिक आभासी दुनिया में खोए रहते हैं।

आज के युवाओं को समझने की चुनौती: पीढ़ियों के बीच का अंतर:

पारंपरिक दृष्टिकोण: पिछली पीढ़ियाँ पारंपरिक मूल्य और रीति-रिवाजों का पालन करती थीं। वे अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर बच्चों को मार्गदर्शन देती थीं और उनसे उम्मीद करती थीं कि वे इन मूल्यों का पालन करें।

आधुनिक दृष्टिकोण: आज के युवा स्वतंत्रता और स्वायत्तता को महत्व देते हैं। वे अपने निर्णय स्वयं लेना चाहते हैं और अपने जीवन को अपने तरीके से जीना चाहते हैं। उन्हें पारंपरिक मूल्यों का पालन करना पुराना और अप्रासंगिक लगता है।

प्रभावशाली संचार की आवश्यकता: पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण के बीच सामंजस्य: पीढ़ियों के बीच अंतर को समझने और स्वीकार करने की आवश्यकता है। माता-पिता और बड़ों को चाहिए कि वे अपनी संचार शैली में बदलाव लाएँ और युवाओं के दृष्टिकोण को समझें। यह आवश्यक है कि पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण के बीच सामंजस्य स्थापित किया जाए।

तर्कसंगत और सहनशील दृष्टिकोण: युवाओं को समझाने के लिए तर्कसंगत और सहनशील दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। उनकी बातों को सुनना और समझना चाहिए और फिर उनके तर्कों का सम्मान करते हुए उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन करना चाहिए। उन्हें अपनी गलतियों से सीखने का अवसर दिया जाना चाहिए और उनके आत्मविश्वास को बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए।

संचार की भूमिका: संवाद का महत्व: सकारात्मक संवाद के माध्यम से पीढ़ियों के बीच के अंतर को पाटा जा सकता है। खुली बातचीत से दोनों पक्षों को एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझने में मदद मिलती है। यह आवश्यक है कि संवाद सकारात्मक और उत्पादक हो।

उदाहरण द्वारा शिक्षा: युवाओं को समझाने का सबसे प्रभावशाली तरीका है उदाहरण द्वारा शिक्षा। माता-पिता और बड़ों को अपने आचरण और व्यवहार के माध्यम से सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। इससे युवा खुद-ब-खुद इन मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित होंगे।

निष्कर्ष: पिछले 20/25 सालों में समाज में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं, जिसने युवाओं की जीवनशैली, सोच और व्यवहार को प्रभावित किया है। रहन-सहन, खाने-पीने की आदतें और स्वतंत्रता की चाह में बदलाव आया है। आधुनिक तकनीक और वैश्वीकरण ने इन परिवर्तनों को और भी तेज कर दिया है।

आज के युवा स्वतंत्रता और स्वायत्तता को महत्व देते हैं, जो उनके व्यक्तित्व और सोच को प्रभावित करता है। पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक दृष्टिकोण के बीच संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन संवाद, सहनशीलता और तर्कसंगत दृष्टिकोण के माध्यम से इसे संभव बनाया जा सकता है।

माता-पिता और बड़ों को चाहिए कि वे युवाओं के दृष्टिकोण को समझें और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन करें। उन्हें अपनी गलतियों से सीखने का अवसर दें और सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करें। इससे न केवल युवाओं का आत्मविश्वास बढ़ेगा, बल्कि वे अपने जीवन में अनुशासन और तिकता का पालन भी करेंगे।

इस प्रकार, पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण के बीच सामंजस्य स्थापित करके हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकते हैं जहाँ युवा स्वतंत्रता के साथ-साथ अनुशासन और नैतिकता का भी पालन करें। यह न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि समाज की स्थिरता और प्रगति के लिए भी महत्वपूर्ण है।

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

चातुर्मास के पर्व

- 3 जुलाई- अष्टानिका पर्व
- 10 जुलाई- गुरु पूर्णिमा
- 12 जुलाई- वीर शासन जयन्ति
- 25 जुलाई- सोलह दिवसीय शांति विधान
- 31 जुलाई- पारस मोक्ष कल्याणक
- 9 अगस्त- रक्षाबंधन पर्व
- 28 अगस्त- दशलक्षण महापर्व
- 2 सितम्बर- सुगंध दशमी
- 5 सितम्बर- रत्नत्रय व्रत
- 6 सितम्बर- अनन्त चतुर्दशी
- 8 सितम्बर- क्षमावाणी पर्व
- 22 सितम्बर- नवरात्रि प्रारम्भ
- 2 अक्टूबर- दशहरा पर्व
- 7 अक्टूबर- शरद पूर्णिमा
- 19 अक्टूबर- धनतेरस छोटी दीपावली
- 20 अक्टूबर- दीपावली पर्व
- 21 अक्टूबर- भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक महोत्सव
- 23 अक्टूबर- भाई दूज
- 26 अक्टूबर- लाभ पंचमी
- 29 अक्टूबर' अष्टान्हिका पर्व प्रारंभ

प्रवेश सूचना, आवेदन की अंतिम तारीख

श्री दिग. जैन तीर्थ प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी में सत्र 2025-2026 में प्रशिक्षण शिक्षा ग्रहण कर रोजगार प्राप्त कीजिए! विशेषः श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी मुम्बई' द्वारा प्रायोजित। पूजन कोर्स विधि-विधान कोर्स कार्यालय प्रबंधन कोर्स प्रवचन कोर्स एकाउंट कोर्स कम्प्यूटर, ज्योतिष शास्त्र, मोबाइल रिपेयरिंग, जैन दर्शन, सामान्य प्रबंध। आयु सीमा - 18 वर्ष से 30 वर्ष (दसवीं, बारहवीं, ग्रेजुएट एवं अन्य)। निःशुल्क शिक्षा, आवास भोजन, मात्र 9 माह समयावधि सुविधाएं (जुलाई 2025 से प्रारंभ), सम्पर्क प्राचार्य - 9009672513, मुख्य व्यवस्थापक - 8770358404 पता - श्री दिगम्बर जैन तीर्थ प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी जिला- छतरपुर (म. प्र.)

समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये। संस्था को 12 I/80G (प्रमाण पत्र संख्या URN-AAHTS7154EF2025101) एवं CSR-1 (प्रमाण पत्र संख्या -SRN-N30616809) के तहत आयकर में छूट प्राप्त है। संपर्क : मोबाइल/वाट्सअप - 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA
ACCOUNT NO. - 2405000100033312
RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600 PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR, Lucknow
Pin Code - 226004 (U.P.)

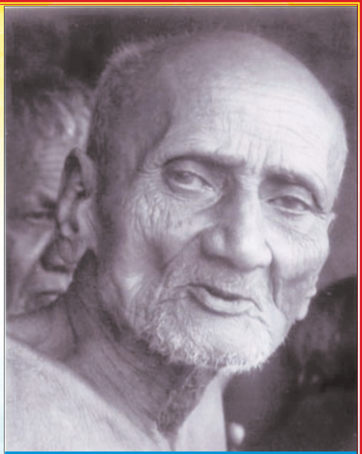

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

बढ़ते मंदिर और मूर्तियों का औचित्य — पृष्ठ 08 पर...

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 32 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 09 जून 2025, वीर नि. संवत् 2550

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

आचार्य श्री ज्ञेयसागर जी महाराज का चातुर्मास सम्मेद शिखरजी में

9 जुलाई को होगी मंगल कलश स्थापना

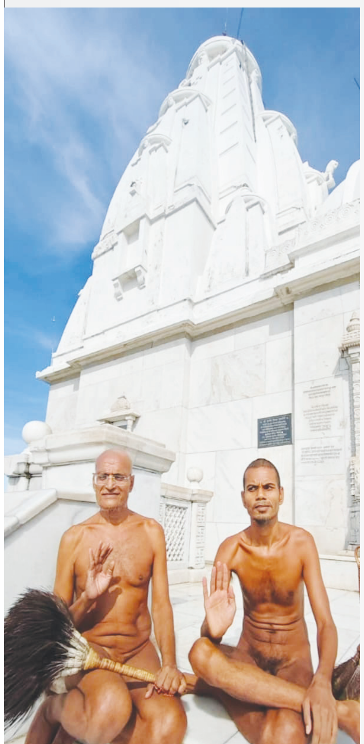

श्री सम्मेद शिखर जी (मनोज जैन नायक)। दिगम्बर जैनाचार्य श्री ज्ञेयसागर जी महाराज का मंगल चातुर्मास 2025 शाश्वत तीर्थक्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी में होगा। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार परम पूज्य गुरुदेव छाणी परम्परा के षष्ट पट्टाचार्य सराकोद्धारक समाधिस्थ आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य सप्तम पट्टाचार्य श्री ज्ञेयसागर जी महाराज ससंघ ''आचार्यश्री ज्ञानसागर सराक भवन'' शिखरजी में विराजमान हैं। आपने व्रत उपवास करते हुए भी तीर्थराज पर्वत की चार वंदना पूर्ण की हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार पूज्य गुरुदेव के मंगल चातुर्मास 2025 के शिखरजी में होने की पूर्ण संभावना है।

गुरुभक्त ब्रह्मचारिणी बहन मंजुला दीदी ने जानकारी देते हुए बताया कि पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री ज्ञेयसागर जी महाराज एवं मुनिश्री नियोगसागर जी महाराज का 2025 का मंगल चातुर्मास ''आचार्यश्री ज्ञानसागर सराक भवन'' शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी में होना सुनिश्चित हुआ है। आगामी 09 जुलाई को भव्य समारोह में मंगल कलश की स्थापना होगी। चातुर्मास की संभावना को देखते हुए सभी तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

पूज्य गुरुदेव के शिखरजी चातुर्मास का समाचार सुनते ही उनके भक्तों में खुशी की संचार हुआ है। अभी से गुरुभक्त बंधुओं ने शिखरजी जाने का मन बना लिया है।

आचार्य सुनील सागरजी का चातुर्मास अहमदाबाद में

प्राकृत ज्ञान केसरी आचार्य सुनील सागरजी महाराज का इस वर्ष का चातुर्मास गुजरात राज्य के अहमदाबाद महानगर में निश्चित हुआ है।

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

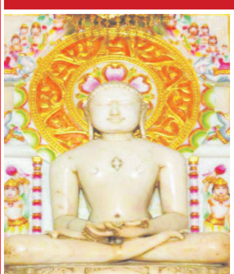

869 साल प्राचीन मूलनायक
श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM

@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885

नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330

विशुद्धमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में मनाया श्रुत पंचमी पर्व हर्षोल्लास पूर्वक

जिनवाणी माता की निकाली जयकारों के साथ भव्य शोभायात्रा

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाडा, चौरू, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, लसाडिया, निमेडा तथा लदाना सहित सभी जगह जैन धर्म का मुख्य पर्व श्रुत पंचमी महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। प्रातः 7 बजे बीचला मंदिर पार्श्वनाथ जिनालय से आर्यिका संघ के पावन सानिध्य में जयकारों के साथ मां जिनवाणी की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई, जो नगर भ्रमण करते हुए पार्श्वनाथ चैत्यालय पर पहुंची जहां पर धवला, जय धवला, महाधवला आदि ग्रन्थों की अष्ट द्रव्यों से पूजा की गई तथा सकल जैन समाज ने सभी ग्रन्थों को यथावत स्थान पर विराजमान कर पूजा अर्चना करते हुए सुख समृद्धि की कामना की। कार्यक्रम में आर्यिका विशुद्ध मति माताजी ने अपनी मंगलमयी वाणी से सभी श्रृद्धालुओं को श्रुतपंचमी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्रुत पंचमी दिगंबर जैन समाज का पर्व है, दिगंबर जैन परंपरा के अनुसार श्रुत पंचमी पर्व ज्ञान की आराधना का महान पर्व है। इस दिन भगवान महावीर की दिव्य वाणी को पहली बार षट्खण्डागम् ग्रन्थ में लिपीबद्ध किया गया था। यह पर्व आगम ग्रन्थों के महत्व को दर्शाता है, जो दिगंबर जैन धर्म का सर्वोच्च और प्राचीन पवित्र ग्रंथ है। इस दिन जैन समाज अपने धार्मिक ग्रंथों और शास्त्रों की रक्षा और सम्मान के लिए पूजा अर्चना करते हैं।

कार्यक्रम में अग्रवाल समाज मंदिर समिति के मंत्री कमलेश चौधरी ने बताया कि प्रेमचंद-अशोक कुमार बड़जात्या चोमू बाग सांगानेर वालों ने चित्र अनावरण किया, मोहनलाल जैन परिवार सवाईमाधोपुर ने दीप प्रज्वलित किया, नरेश कुमार जैन ग्वालियर वालों ने आर्यिका विशुद्धमति माताजी का पाद प्रक्षालन किया, कैलाश चंद, हनुमान प्रसाद, सीताराम, अशोक, विनोद कुमार, भरत जैन कलवाड़ा वालों ने आर्यिका विज्ञमति माताजी का पाद प्रक्षालन किया। आर्यिका विशुद्धमति माताजी एवं आर्यिका विज्ञमति माताजी को सकल दिगम्बर जैन समाज सवाईमाधोपुर एवं सकल दिगम्बर जैन समाज चोमू बाग सांगानेर ने शास्त्र भेंट किया। आर्यिका विशुद्धमति माताजी एवं आर्यिका विज्ञमति माताजी को प्रेमचंद-महेंद्र कुमार बड़जात्या चोमू बाग सांगानेर एवं प्रमोद कुमार उदित जैन ग्वालियर ने वस्त्र भेंटकर पुण्यार्जन प्राप्त किया। इसी कड़ी में गोधा ने बताया कि विभिन्न शहरों एवं कस्बों से आए हुए श्रृद्धालुओं ने पावन चातुर्मास 2025 हेतु आर्यिका संघ को श्रीफल भेंट किया जिस पर आर्यिका विशुद्धमति माताजी ने सारे समाज को अंगित कर मुस्कुराते हुए सवाईमाधोपुर में पावन चातुर्मास 2025 के करने की घोषणा की जिससे सारा संत भवन जयकारों के साथ गूंज उठा।

कार्यक्रम में समाज कैलाश कलवाड़ा, सोहनलाल झंडा, रामस्वरूप मोदी, कैलाश कासलीवाल, महावीर झंडा, महावीर अजमेरा, सुकुमार झंडा, महावीर प्रसाद बावड़ी, संतोष बजाज, कैलाश कैडीला, भागचंद कासलीवाल, वीरेंद्र डोसी, राजेंद्र मोदी, पारस मोदी, विनोद मोदी, पवन कागला, राजकुमार कागला, अशोक कागला, मनीष गोधा तथा सुशीला बावड़ी, मीरा झंडा, राजश्री कागला, रेखा झंडा, रानी नला, संगीता कागला, प्रीति कलवाड़ा, ललिता बजाज, पिंकी मोदी, शिप्रा कासलीवाल, अंजु मोदी सहित सारे श्रावक श्राविकाओं ने कार्यक्रम में शामिल होकर सहभागिता निभाते हुए उपस्थिति दर्ज कराई तथा राजमहल, सवाईमाधोपुर, ग्वालियर, प्रताप नगर, सांगानेर चोमू बाग, जयपुर, डिग्गी, मालपुरा, कोटा, निवाई, चकवाडा, माधोराजपुरा सहित सारे राजस्थान से श्रद्धालुगणों ने शिरकत कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाते हुए आर्यिका संघ से मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्कार शिविर आयोजित किए गए

संवाददाता

जयपुर शहर में तीनों नसिया महिला मंडल, तीनों नसियां जैन समाज बजो की नसियां, तीनों नसियां, जयपुर में श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर द्वारा आयोजित श्रमण संस्कृति संस्कार शिविर दिनांक 16 मई 2025 से 27 मई, 2025 तक आयोजित किया गया। शिविर में श्रमण संस्कृति संस्थान से पधारी विदुषी सुश्री पायल जैन व सुश्री आयुषी जैन ने अध्ययन कराया। शिविर में स्थानीय बालक बालिकाओं और महिलाओं ने उत्साह से भाग लिया शिविर के शुभारंभ पर जिनवाणी माता के साथ प्रभातफेरी निकाली गई। बालिकाओं व महिलाओं के द्वारा नाटक द्वारा भगवान आदिनाथ का वैराग्य की अति सुंदर प्रस्तुति दी। शिविर में छहढाला, ईष्टोपदेश, तत्वार्थ सूत्र प्रथम अध्याय, सिद्धांत प्रवेशिका भाग प्रथम व तृतीय का अध्ययन कराया गया, शिविर के समापन पर सभी प्रतिभागी बच्चों व महिलाओं को प्रमाणपत्र व पुरस्कार से सम्मानित किया गया, महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती अंजना शाह, मंत्री श्रीमती किरण दीवान, शिविर संयोजक श्रीमती सुनीता सौगाणी, श्रीमती सुशीला बज, समाज श्रेष्ठी श्रीमती अनिता जैन पार्षद वार्ड नंबर 21, नगर निगम हैरिटेज, जयपुर, श्री कमलजी दीवान, श्री ज्ञानचंद जी बज, निर्मलजी जैन, महेन्द्र जी सौगाणी, संजयजी शाह सहित बडी संख्या में उपस्थित श्रेष्ठीजनों ने आयी हुई दीदीयों पायल दीदी, जैन व आयुषी दीदी का सम्मान कर धन्यवाद ज्ञापित किया। भगवान आदिनाथ व आचार्य विद्यासागरजी महा मुनिराज के जयकारों से शिविर का समापन किया गया। यह जानकारी मंदिर समिति के कमल दीवान ने दी।

आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ को पावन चातुर्मास 2025 हेतु बिजोलिया में किया श्री फल भेंट

फागी संवाददाता

चकवाडा से धर्मगुणामृत ट्रस्ट के सरंक्षक अशोक जैन अनोपडा की अगुवाई में भीलवाड़ा जिले के बिजोलिया में विराजमान जैनाचार्य वात्सल्य वारिधि आचार्य 108 श्री वर्धमान सागर महाराज ससंघ के दर्शनार्थ चकवाड़ा से धर्मगुणामृत ट्रस्ट के ट्रस्टियों का एक दल गया, जहां पर धर्म गुणामृत ट्रस्ट पर पावन चातुर्मास 2025 हेतु आचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया। उक्त समय ट्रस्ट के संरक्षक अशोक जैन अनोपडा, अध्यक्ष विमल कुमार जैन बड़जात्या, महामंत्री एवं प्रवक्ता जयकुमार गंगवाल, हरकचंद गंगवाल, कमल सोगानी दूदू, सुकुमार बोहरा मोजमाबाद, मोहनलाल अजमेरा मंडावरी, महावीर बाकलीवाल चौरु, महेंद्र कासलीवाल, विनोद कलवाड़ा फागी तथा महेंद्र कुमार पाटनी उरसेवा वाले मदनगंज किशनगढ़ निवासी ने सामूहिक रूप से श्रीफल भेंट कर मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया।

पुण्यशाली ही मां जिनवाणी की आराधना कर सकता है

मां जिनवाणी की निकाली भव्य शोभायात्रा

- सरस्वती मति माताजी

संवाददाता

जयपुर, 31 मई 2025। श्री दिगंबर जैन मंदिर वरुण पथ मानसरोवर जयपुर में विराजमान परम पूज्या आर्यिका सरस्वती मती माताजी ने उपस्थित जन समुदाय को श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर मंगल आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप अपने जीवन का कल्याण तभी ही कर सकते हैं जब आपके पास जिनवाणी रूपी ज्ञान हो क्योंकि मां जिनवाणी के माध्यम से ही हमें धर्म को समझने की भगवान की आराधना करने की शक्ति प्राप्त होती है और जिनवाणी की आराधना केवल पुण्यशाली जीव ही कर सकते हैं। यहां बैठे हुए सभी बन्धु पुण्यशाली जीव हैं क्योंकि उन्हें श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर मां जिनवाणी की आराधना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर मंगल आशीर्वाद देते हुए पूज्या आर्यिका अनंतमती माताजी ने कहा कि जैन धर्म में सर्वाधिक महत्वपूर्ण यदि कुछ है तो मां जिनवाणी क्योंकि यदि हमारे पास जिनवाणी नहीं हो तो हमें ज्ञान का बोध प्राप्त नहीं हो सकता। हमारे अंदर जिनवाणी के माध्यम से धर्म के प्रति ज्ञान का संचार होता है। समाज समिति के अध्यक्ष एम पी जैन ने बताया कि श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर श्री जी के प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारा करने का सौभाग्य विमल-बेला बाकलीवाल एवं गिरिश-सोमा जैन को प्राप्त हुआ।

जुलूस समिति के संयोजक विनेश सोगानी ने बताया कि विशाल शोभायात्रा से पूर्व चार पत्रों का शोध इंद्र के रूप में चयन किया गया। मां जिनवाणी की इस विशाल शोभायात्रा में चारों सौधर्म इन्द्रों ने मां जिनवाणी को पालकी में विराजमान कर नगर भ्रमण करवाने का सौभाग्य ज्ञान बिलाला, विमल बाकलीवाल, गिरीश जैन, रोहित जैन को प्राप्त हुआ। मां जिनवाणी की विशाल शोभायात्रा में अनेकों स्थान पर परम पूज्या गुरु मां के श्री चरणों का पाद पक्षालन करने एवं आरती करने का सौभाग्य आमजन को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर मानसरोवर महिला मंडल एवं दिगंबर जैन महिला महासमिति के पाठशाला के सभी बच्चों ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर भव्यता प्रदान की बच्चे, महिलाएं, पुरुष सभी भगवान एवं गुरु मां के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे। कार्यक्रम में कैलाश सेठी, पदम चंद जैन भरतपुर, प्रीती सोगानी को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर एम पी जैन, ज्ञान बिलाला, कैलाश सेठी, विनेश सोगानी, राजेन्द्र सोनी, मुकेश कासलीवाल, अनील जैन सोडा, नरेन्द्र कासलीवाल, अनील दीवान, पदम चंद जैन भरतपुर, अजीत जैन बी ओ बी, निर्मल शाह संतोष कासलीवाल, सतीश कासलीवाल, चंद्रकांता छाबड़ा, हिमानी जैन, रजनी लुहाड़िया, कृष्णा जैन, अनीता लुहाड़िया, भंवरी देवी, मुन्ना देवी, मंजू छाबड़ा राजावास, आशा सेठी, प्रीती सोगानी, अंजू जैन, उषा झांझरी, रजनी लुहाड़िया, अनीता लुहाड़िया सहित अनेको साधर्मी बंधुओं ने सहभागिता प्रदान की।

समर कैंप का हुआ समापन

मदनगंज किशनगढ़। श्री अग्रवाल समाज संस्था के तत्वावधान में श्री अग्रवाल नवयुवक मंडल संस्था द्वारा आयोजित 15 दिवसीय समर कैंप का समापन शनिवार को श्री अग्रसेन स्टेडियम में उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस शिविर में बच्चों ने बैडमिंटन और स्केटिंग की विभिन्न तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

श्रुत पंचमी पर्व पर जिनवाणी की शोभायात्रा

मदनगंज किशनगढ़। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन पंचायत के तत्वावधान में शनिवार को सिटी रोड स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में श्रुत पंचमी पर्व धूमधाम से मनाया गया। सुबह भगवान के अभिषेक, शांतिधारा तत्पश्चात श्रुत स्कंध विधान का आयोजन किया गया। जिसके भक्ति भाव से पूजन करते हुए 60 अर्घ्य जिनवाणी माता को समर्पित किए गए। विधान में सौधर्म इंद्र बनने का सौभाग्य प्रेम चंद, प्रकाश चंद गंगवाल परिवार को मिला। विधान के बाद श्रुत जिनवाणी माता की बैंड बाजों सहित शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें पुरुष व महिलाएं अपने मस्तक पर जिनवाणी को लेकर चल नगर भ्रमण किया।

इस दौरान विजय काला ने बताया कि आज से 46 वर्ष पूर्व वर्ष 1979 में श्रुत पंचमी के दिन संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराज द्वारा श्री आदिनाथ जिन बिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव के अवसर पर आदिनाथ भगवान की प्रतिमा को सूरी मंत्र देकर मंदिर में प्रतिष्ठित किया था। पूरे राजस्थान में आचार्य विद्यासागर द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमा एक मात्र किशनगढ़ में ही है। शाम को 48 दीपों द्वारा भक्तामर पाठ व महाआरती की गई।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

10 दिवसीय जैन रामायण कथा के आठवें रोज कथाकार मुनि जयकीर्ति महाराज से विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने लिया मंगलमय आशीर्वाद

मनुष्य को नश्वरता के लिए जीवन व्यर्थ नहीं करना चाहिए, श्रद्धा और विश्वास के साथ की गई भक्ति से प्रत्येक कार्य का फल मीठा होता है: मुनि जयकीर्ति महाराज

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 24 मई। गुलाबी नगरी जयपुर की पावन धरा पर पहली बार दुर्गापुरा के श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभजी में राजस्थान जैन युवा महासभा, जैन कनेक्ट, दुर्गापुरा जैन मंदिर ट्रस्ट एवं महिला मंडल दुर्गापुरा के संयुक्त तत्वावधान में चल रही दस दिवसीय जैन रामायण कथा के आठवें दिन रविवार को मुनि जयकीर्ति महाराज ने अपने मंगलमय उद्बोधन में श्रृद्धालुओं को संबोधित करते हुए बताया कि मनुष्य को नश्वरता के लिए अपना जीवन व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए, श्रद्धा और विश्वास के साथ की गई भक्ति से प्रत्येक कार्य का फल मीठा होता है। मनुष्य को अपने जीवन में हमेशा सकारात्मक सोच के साथ कार्य करना चाहिए। उन्होंने कथा के दौरान राम, सीता, लक्ष्मण का अयोध्या में प्रवेश, मथुरा में महामारी, सीता का वनवास आदि प्रसंगों का चिर परिचित शैली में चित्रण किया। कार्यक्रम में जैन गजट के राजाबाबू गोधा शिरकत करते हुए बताया कि राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के जिला अध्यक्ष संजय पाण्डया एवं जिला महामंत्री सुभाष बज ने जानकारी देते हुए बताया कि प्राचीन जैन ग्रन्थ 'पद्मपुराण' पर आधारित जैन रामायण कथा के संगीतमय आयोजन भगवान चन्द्रप्रभू के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन राजस्थान जैन सभा की कार्यकारिणी सदस्या राखी जैन, ऋषि जैन पलक जैन एवं विनोद जैन कोटखावदा, जय कुमार जैन, राजाबाबू गोधा, जिनेन्द्र जैन जीतू, डॉ. मोहन लाल मणि, प्रकाश चांदवाड, राजेन्द्र काला, अनुज जैन, अतीव जैन आदि ने किया। ब्रह्मचारिणी पल्लवी दीदी एवं मुनि भक्त जिनेन्द्र जैन जीतू द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। मुनि जयकीर्ति महाराज के पाद प्रक्षालन नेमीचन्द-मंजू, अंकुर-निधि लुहाड़िया परिवार राजा श्रेणिक परिवार तथा राजस्थान सरकार के वरिष्ठ आई. ए. एस अधिकारी कुलदीप राकां, अतिरिक्त आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं ड्रग नियंत्रण आर. ए. एस अधिकारी पंकज ओझा, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष संदीप लुहाड़िया एवं मुनि भक्त भाग चन्द कोठ्यारी ने किया।

कार्यक्रम में राजा श्रेणिक ज्ञानचन्द-स्नेह लता दाखियां परिवार द्वारा किये गये प्रश्न का मुनि श्री द्वारा समाधान के रुप में रविषेणाचार्य द्वारा रचित प्राचीन जैन ग्रन्थ 'पद्मपुराण' में उल्लेखानुसार जैन रामायण कथा का वाचन प्रारम्भ किया। गुरुदेव के मुखारविंद से चल रही भव्य राम कथा में आठवें दिन में बहुत सुंदर प्रसंग आते हैं राम, लक्ष्मण, सीता का लंका में 6 वर्ष निकलते हैं, विभीषण राम को लंका का राजा बनाना चाहते हैं लेकिन राम मना कर देते हैं फिर राम लक्ष्मण और सीता का अयोध्या में प्रवेश होता है। माता और भाई से आत्मीय मिलन होता है बहुत ही सुखद क्षण आते हैं। प्रजाजन और सभी मिलकर के बहुत स्वागत करते हैं और फिर भरत को वैराग्य हो जाता है। कहते हैं ''संसार में कोई भी परिजन शरण नहीं है, धर्म ही शरण है, सिद्धात्म ही परम शरण है'' उसी समय भरत को देखकर के त्रिलोक मंडल हाथी का क्रोध शांत हो जाता है और उस हाथी को जाती स्मरण हो जाता है। कहां हम दोनों दोस्त थे और वह राजा और मैं हाथी बना और हाथी भी अणुव्रत को ग्रहण करता है। भरत 1000 राजाओं और 300 स्त्रियों के साथ केकेई भी दीक्षा ले लेती है और भरत को मोक्ष हो जाता है और राम का राज्याभिषेक होता है। मथुरा में चमरेंद्र के द्वारा महामारी होती है। सप्त ऋषि के द्वारा महामारी का नाश होता है। सप्त ऋषियों का महिमा मंडन होता है। सीता के द्वारा ''किमिंचिक दान दिया जाता है फिर प्रजा के द्वारा सीता का ''अवर्णवाद'' होता है। राम के लिए पुनः असहनीय क्षण आते हैं और पुनः सीता का वनवास हो जाता है। संसार की कैसी विचित्रता है पूर्व उपार्जित कर्मों को भोगना ही पड़ता है।

कार्यक्रम में मुख्य संयोजक अनुज जैन, जैन कनेक्ट के अध्यक्ष एडवोकेट अंकुर जैन पाटनी एवं जैन कनेक्ट के अतीव जैन ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर आई. ए. एस कुलदीप राकां, आर. ए. एस पंकज ओझा, संदीप लुहाड़िया, जय कुमार जैन कोटा वाले, राखी जैन, सुरेश कासलीवाल, कमल वैद, अतुल बिलाला, जिनेन्द्र जैन जीतू, अनिल पाटनी, सर्वेश जैन रुपाहेडी कला, राजाबाबू गोधा सहित सभी अतिथियों ने श्रीफल भेंटकर मुनि श्री से मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम में आयोजन समिति के चेतन जैन कार्यक्रम में दुर्गापुरा जैन समाज की ओर से अध्यक्ष प्रकाश चांदवाड एवं महामंत्री राजेंद्र कुमार काला की अगुवाई में मुनि जयकीर्ति महाराज को दुर्गापुरा जैन मंदिर में वर्ष 2025 के चातुर्मास के लिए श्रीफल भेंट किया। इसी कड़ी में जैन समाज की 130 वर्ष सबसे पुरानी पत्रिका जैन गजट का मुनि श्री ने विमोचन करके अवलोकन किया और इसकी भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि उक्त पेपर जैन समाज को हर घर में मांगना चाहिए ताकि समाज की साधु संतों की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हो सके।

राजकीय अतिथि, कवि, हृदय, वात्सल्य मूर्ति, अभीक्ष्ण ज्ञानपयोगी, आचार्य 108 श्री शशांक सागर जी मुनिराज अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में विराजमान हैं

शशांक वाणी

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थो की पावन रजकण, बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन, ऐसे आचार्य शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत शत नमन

मन की करने में ही सारा जगत परेशान है, अत: मन की नहीं ज्ञान की सुनो

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

1. श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर, जयपुर)
2. पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
3. श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपर)
4. श्रेष्ठी अनूप चंद जैन (भुसावर वाले, जयपुर)
5. श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोलिया (मारूजी का चैक, जयपुर)

1. अरूण कुमार काला अध्यक्ष (कीर्ति नगर जयपुर)
2. अशोक चांदवाड, (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
3. भंवरी देवी काला ध.प. महेन्द्र काला, (स्वर्णपथ मानसरोवर जयपुर)
4. श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
5. प्रेमचन्द सुभाषचन्द लक्ष्मी बगड़ा (नेमीसागर कालोनी, जयपुर)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

सेवा धर्म समाज की आगम के अनकूल।
यह पुनीत उद्देश्य है जैन गजट का मूल।।
जैन गज़ट शिकायत 9415008344 जैन गज़ट

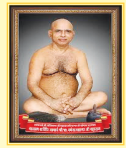

प्रसिद्ध समाजसेवी श्री निर्मल कुमार जी बिन्दायका
बगरू (जयपुर) निवासी कोलकाता प्रवासी को
12 जून 2025 पर 61 वें जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं

आप जियो हजारों साल

साल के दिन हों पचास हजार

श्री निर्मल कुमार जी बिन्दायका बगरू (जयपुर) निवासी कोलकाता प्रवासी
(जन्मोत्सव 12 जून 1964)

-: शुभाकांक्षी :-

समस्त बिन्दायका परिवार (बगरू, जयपुर, सूरत, कोलकाता)
एवं समस्त बड़जात्या परिवार, मदनगंज किशनगढ़ (राजस्थान)

संकलन: राजाबाबू गोधा, फागी, जैन गजट संवाददाता फागी एवं राजस्थान मो. 09460554501

संपादकीय

भूलिये और मस्त रहिये

याद रखना और भूल जाना मानव जीवन के दो अहम पहलू हैं। मनुष्य जीवन में जितना याद रखना जरूरी है उतना ही भूलना भी आवश्यक है। मनुष्य यदि भुलक्कड़ नहीं होता तो दुःखों के बोझ से उसका दम घुट जाता और मनुष्य का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाता। हकीकत में आज के तनावग्रस्त जीवन में भूलना एक वरदान है। आइये जीवन को आनन्दमय बनाने के लिये हमें क्या भूलना चाहिए ? इस पर विचार करें -

1. **अतीत के दुःखों को भूलें** - समय सदा एक सा नहीं रहता। जीवन में सुख के साथ दुःख, अपमान और कष्ट का आना स्वाभाविक है। जीवन का यही क्रम है। इसलिये तो कहा है कि अगर जीना है तो जहर भी पीना ही पड़ेगा। हकीकत में दुःख, अपमान और कष्ट हमें नया दृष्टिकोण और प्रेरणा देते हैं, ताकि हम उनको भूलकर जीवन का आनन्द ले सकें। प्रेरणा प्राप्त करने के लिये तो अतीत के झरोखे में झांकना उचित है परन्तु अतीत को सर्वस्व मानकर उसमें खोजना उचित नहीं है। अतीत के दुःखों को बार-बार याद करने से हमारा वर्तमान भी दुःखद बनता है। जैसे रात के बाद दिन आता है उसी तरह दुःख के बाद सुख का आना भी निश्चित है। अतः वर्तमान के सुखों का आदर स्वागत कर भविष्य को आशावान बनाया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि अतीत के अप्रिय प्रसंगों को भुलाकर अर्थात् स्मृति से निकल कर ही हम जीवन का सुखी बना सकते हैं।

कविवर बच्चन के शब्दों में -

''जो बीत गई सो बात गई, अम्बर के आंचल को देखो कितने इसके तारे टूटे, कितने इसके प्यारे छूटे, पर बोलो टूटे तारों पर, अम्बर कब शोक मनाता है जो बीत गई सो बात गई।''

1. **दूसरों की भूलों को भूलें** - गलती कभी भी किसी से भी सम्भव है, क्योंकि गलती करना मनुष्य का स्वभाव है। मनुष्य यदि गलती नहीं करे तो वह देवता कहलाएगा। परन्तु मनुष्य तो मनुष्य है देवता नहीं। दूसरों के द्वारा की गई भूलों को दिमाग में रखने से हमें गुस्सा आता रहेगा और हम तनाव से ग्रस्त रहेंगे जिससे हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। अतः सुखी रहने के लिये दूसरों की भूलों को भूलकर मस्त रहना चाहिए। इसी में हमारा फायदा है। कहा भी है - औरों की भूलों को भूलें, अपनी भूल सुधार।

3. अपमान के प्रसंगों को भूलें, सुख और दुःख की तरह मान और अपमान जीवन के अहम हिस्से हैं। कई बार हमें जीवन में अपमान भी सहना पड़ता है, पर मनुष्य अपमान पसन्द नहीं करता। अपमान से उसके हृदय में शुल सी चुभती है और वह तिलमिला उठता है। अपमान को याद रखने से बदले की भावना पनपती है। जिससे मनुष्य बदला लेने के लिये हम समय बेचैन रहता है और उसी में अपनी शक्ति खर्च करता है जिससे वह अपने काम की ओर पूरा ध्यान नहीं दे पाता और काम को पूरी शक्ति के साथ नहीं कर पाता जिससे उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है। इस तरह अपमान की घटना को याद रखने में स्वयं का ही नुकसान होता है। मनोवैज्ञानिकों का तो यहां तक कहना है कि यदि अपमान को भूलने की क्षमता आप में नहीं है तो किसी न किसी अंश में आप उस अपमान के हकदार हैं। अतः हमें अपमान को भूलकर अपनी शक्ति का उपयोग उन कामों में करना चाहिए जो हमें तरक्की देकर आगे बढ़ा सके।

4. **व्यर्थ की बातों को भूलें** - कई बार हम व्यर्थ की बातों को याद रखकर उनमें उलझ जाते हैं। हकीकत में व्यर्थ की बातों का दिमाग में रखना सरदर्द मोल लेना है। अतः केवल अति आवश्यक बातों को याद रखकर व्यर्थ की बातों को भूल जाना चाहिए। दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं ? अथवा क्या कहते हैं ? इस पर गौर कर हम सजग तो रह सकते हैं, परन्तु दूसरों से सुनी हुई व्यर्थ की बातों को याद रखकर हम अपने साथ अन्याय नहीं कर सकते। व्यर्थ की छोटी-छोटी बातों को भूल जाना ही उचित है। सुनो सबकी करो मन की, की कहावत का जीवन में उपयोग कर जीवन को सही दिशा में मोड़ा जा सकता है।

5. **असहयोग को भूलें** - हम जिनसे सहयोग की अपेक्षा करते हैं, कई बार वे ही लोग सहयोग न कर असहयोग करते हैं जिससे हमें दुःख होता है। व्यक्ति सामान्यता ऐसे प्रसंगों को भूल नहीं पाता। परन्तु दुनिया स्वार्थी है, स्वार्थ रहने तक ही वह सहयोग करती है। इस बात को समझकर असहयोग को दुख न मानकर हमें असहयोग के क्षणों को भुला देना चाहिए। जैसे को तैसा की भावना को दिमाग में रखकर यदि आपने दूसरों के साथ असहयोग का व्यवहार किया तो कई लोग आपके दुश्मन बन जायेंगे जिससे आपका जीना दूभर ''हो जायेगा। अतः असहयोग को भुलाकर जो सम्भव हो वह करें और आगे बढ़ें।

निष्कर्ष - प्रकृति के दिये हुए भूलने के गुण को ध्यान में रखते हुए ऊपर वर्णित बातों को भूलकर ही हम सच्चे जीवन का आनन्द ले सकते हैं। जीवन में घटित होने वाली सभी बातों न तो याद रखी जा सकती हैं न उन्हें याद रखना हमारे हित में हैं। अतः भूलिये और मस्त रहिये।

- कपूरचन्द जैन पाटनी
प्रधान सम्पादक

विश्व में हुए जैन नगण्य, क्या भारत में भी होगी ऐसी

संजय जैन बड़जात्या, कामां, संवाददाता

वर्तमान परिदृश्य में यदि आबादी की संख्या पर दृष्टिपात करें तो विश्व में धर्म की आबादी के अनुसार जैन धर्म नगण्य हो चुका है। जैन धर्म को मानने वालों की गिनती अन्य धर्म में की जाती है। आइए कुछ विश्लेषण करते हैं और इस बात पर भी चिंतन करते हैं कि क्या भारत में भी ऐसी स्थिति होने वाली है? जहां हम आधा प्रतिशत से भी कम आबादी का हिस्सा हैं। क्या धर्म के कॉलम से जैन को हटाकर अन्य धर्म के कॉलम में सम्मिलित होना होगा?

2023 के लिए प्रमुख धार्मिक समूहों का अनुमानित आकार -

धर्म	प्रतिशत
ईसाई धर्म	30.7%
इस्लाम	24.9%
असंबद्ध	15.6%
हिन्दू धर्म	15.1%
बुद्ध धर्म	6.6%
लोक धर्म	5.6%
अन्य धर्म	1.5%

विश्व की वर्तमान आबादी लगभग 800 करोड़ है। जिसमें से अनुमान के अनुसार भारत में रहने वाली जैन आबादी 47 लाख और विदेशों में निवासरत 3 लाख तो लगभग कुल 50 लाख की आबादी जैन धर्मावलंबियों की सम्पूर्ण विश्व में है। प्रतिशत जैन आबादी की बात करें तो फलावट में मात्र 0.0625 प्रतिशत है जो कि गणना में नगण्य ही है क्योंकि यहूदी भी 0.2 प्रतिशत और सिख भी 0.3 प्रतिशत हैं तो अन्य धर्मों की लिस्ट में भी नाम नहीं आ पा रहा है। सोचने वाली बात तो है कि 16वीं शताब्दी में 4 करोड़ जैन आबादी 2025 आते आते मात्र 50 लाख रह गयी जिसमें युवाओं की संख्या तो और भी कम है। अगले कुछ वर्षों में यह और तीव्रता के साथ घटने वाली है। एक अनुमान के मुताबिक 2051 में जैन आबादी भारत में मात्र 35 लाख के आसपास होगी। चिंतन, मनन, मंथन जरूरी है। साथ ही आवश्यक कदम समय रहते उठाने भी अति आवश्यक है। सभी को मिलकर इस दिशा में सटीक प्रयास करने चाहिए। जैन समाज की सभी राष्ट्रीय स्तर की संस्थाएं चिंतन शिविर का आयोजन कर ऐसे निर्णय लें जिससे कि यह चिंता समाप्त हो सके।

जयपुर की ओर विहार कर रहे
परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में
शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन
नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन, भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार
'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009
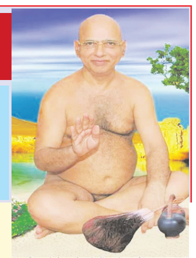
Jain Group

तीन सम- सामयिक चिंतन

तीन सम- सामयिक चिंतन

(डॉ.) चिरंजी लाल बगड़ा, कोलकाता

1. थूंका वहीं जाता है जो गुटकते नहीं - भारत का अधिकांश आदमी मनोरंजन प्रिय होता है, उसे विकास से कोई मतलब नहीं है, चाहे वह बाहरी विकास हो या भीतरी ! उसकी इंद्रियां रस चाहती हैं - उत्तेजक, रोमांचक रस ! विशेषकर मानसिक रस ! जैसे कुत्ता दिनभर बैठा हड्डी चबाता है, वैसे ही भारत का आदमी घंटों बैठा एंटरटेनमेंट चबाता है। वह न्यूज चबाता है, टेलीविजन सीरियल चबाता है, वेब सीरीज चबाता है, रील्स चबाता है, वर्चुअल गेम्स और पोर्न चबाता है और कुछ नहीं है तो वह गुटखा, पान, सुपारी चबाता है।

स्वाभाविक है, जो चबाता है, वह थूकता भी है तो जिस तरह वह जगह-जगह गुटखा और पान थूकता है, उसी तरह वह हर जगह अपने चबाए विचार भी थूकता है। धर्म चबा लिया, तो धर्म थूकता है, ज्ञान चबा लिया, तो ज्ञान थूकता है, विचारधारा चबा ली, तो विचारधारा थूकता है। ख्याल रहे, थूकी वही चीज जाती है, जो गिटकी नहीं जाती। हम भोजन नहीं थूकते क्योंकि भोजन गुटक लिया जाता है, पचा लिया जाता है। पचा लेने से पोषण मिलता है, जो अंग लगता है। हम लोग धर्म नहीं गुटकते, ज्ञान नहीं गुटकते। अगर गुटकते, तो वह पचता, पचता तो अंग लगता, यानि चेतना को लगता किंतु चेतना का कोई पोषण तो कहीं दिखता नहीं वरना इतनी हिंसा, इतनी मार-काट, इतना वैमनस्य नहीं दिखता और दिमागों में इतना जहर नहीं दिखता।

हम धर्म को सिर्फ चबाते हैं, गुटकते नही, ज्ञान को सिर्फ चबाते हैं, फिर थूक देते हैं, गुटकते नहीं इसीलिए हमारी चेतना को कोई पोषण नहीं मिलता। हमें सिर्फ स्वाद से मतलब है, पोषण से नहीं, हमें 'मजा' से मतलब है, 'गिजा' से नही।

हमारी इस आदत को सभी ''धूर्त व्यापारी'' भली तरह जानते हैं फिर चाहे वह धर्मगुरु हो, नेता हो, या न्यूज चैनल हो। भारत में वहीं आदमी सफल है, जो भारतीयों की इस चबाने की आदत को जानता हो। यहां वहीं नेता सफल है जो उसे चबाने के लिए एंटरटेनमेंट दे, मनोरंजन दे, वहीं धर्म-गुरु सफल है, जिस की निश्रा में एंटरटेनमेंट मिलता है। वहीं फिल्म सफल है जिसमें एंटरटेनमेंट हो क्योंकि यहां हम सभी को मनोरंजन ही चाहिए, असली विकास नहीं।

2. सीखने करने का जुनून हो तो उम्र कभी आड़े नहीं आती - उम्र सिर्फ एक संख्या है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं है, यदि सीखने की लगन हो और अपने आप को हमेशा बेहतर करने का जुनून हो, तो उम्र कभी आड़े नहीं आती, बाधक नही बनती।

आईये, एक प्रेरक व्यक्तित्व की उल्लेखनीय उपलब्धियों की जानकारी आपसे साझा करते है -

श्री सी राधाकृष्ण राव, प्रसिद्ध गणितज्ञ (जन्म 1920, निधन 2023) 60 साल की उम्र मे सेवा निवृत होने के बाद, अपनी बेटी के पास रहने के लिए अमेरिका चले जाते है, वहाँ 62 साल की उम्र मे पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय मे सांखिकी (Statistics) के प्रोफेसर बन जाते है और 70 साल की उम्र मे पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय मे वे विभागाध्यक्ष नियुक्त हो जाते है। कहानी यहीं समाप्त नहीं होती, 75 की उम्र में, वे अमेरिका के नागरिक बनते है, 82 की उम्र मे उन्हें व्हाईट हाउस मे 'नेशनल मेडल फॉर साइंस' से सम्मानित किया जाता है और 102 वर्ष की उम्र मे उन्हें Statistics मे नोबेल पुरस्कार के समकक्ष अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने भी उन्हें 1968 मे पद्म भूषण और 2001 मे पद्म विभूषण से सम्मानित किया है।

प्रो. राव का कहना है कि भारत मे सेवा निवृत के बाद कोई नहीं पूछता और संगी साथी भी सत्ता का सम्मान करते है, आपके ज्ञान का, कौशल का नहीं। शायद 102 वर्ष की उम्र मे नोबेल पुरस्कार जैसा सम्मान लेना और शारीरिक स्थिति का ठीक रहना, यह स्वयं मे एकमात्र उदाहरण है, इसलिए उम्र से हार न मानें, कुछ न कुछ नया सीखने, करने की ललक बनाये रखें। खाली दिमाग शैतान का घर बन जाता है। अपने को बेहतर करने का जुनून बनाये रखें, यहीं जीवन मे सफलता का मूल मंत्र है।

3.मानव मस्तिष्क का ऑपरेटिंग सिस्टम - जब कंप्यूटर का जमाना शुरू हुआ था, तब डॉस (DOS) नामक एक बुनियादी ऑपरेटिंग सिस्टम था, सिंपल, सीमित और टेक्स्ट-आधारित, फिर समय के साथ तकनीक ने उड़ान भरी, विंडो 98 आया फिर विंडो 2000 और आज हम Windows 11 और अब AI इंटिग्रेशन जैसे विकसित सिस्टम तक पहुँच गए हैं। हर कुछ साल में हम अपने कंप्यूटर, मोबाइल और ऐप्स को अपडेट कर लेते हैं, क्योंकि हमें नए फीचर्स चाहिए, बेहतर परफॉर्मेंस चाहिए और समय के साथ चलना है, परंतु क्या कभी हमने अपने मस्तिष्क के ऑपरेटिंग सिस्टम को, आस्था, विचार, भावनाए आदि को भी द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के अनुरूप अपडेट किया?

आस्था, विचार, इमोशन बदले तो एक्शन कर्म बदलेंगे और फिर जीवन बदलेगा, कंप्यूटर के इनपुट और आउटपुट की तरह। इंसान का दिमाग हजारों साल पुरानी मान्यताओं, मूल्यों, सोच और डर से भरा पड़ा है। जिन विचारों ने कभी हमारी रक्षा की, वहीं आज हमें आगे बढ़ने से रोक रहे हैं।

- लोग क्या कहेंगे?
- हमेशा ऐसा ही होता आया है।
- धर्म, जाति, समाज का डर।

ये सब पुराने कोड्स हैं, जो अब समय के साथ आउटडेटेड हो चुके हैं। बहुत कम लोग ही हैं जो अपने विचारों को अपग्रेड करते हैं, जो अपने सोच, सिस्टम को चुनौती देते हैं, नए विचारों को स्वीकारते हैं, और सिस्टम अपडेट करते हैं। असल समस्या यह नहीं कि दुनिया बदल रही है, असल समस्या यह है कि हम बदलने को तैयार नहीं। सोचिए - अगर आप आज भी DOS ऑपरेटिंग सिस्टम कंप्यूटर में चला रहे होते, तो क्या हम आज जितना काम कर पाते? अब समय आ गया है, अपने माइंड के ऑपरेटिंग सिस्टम को अपडेट करने का, पुरानी सोच को डिलीट कीजिए, नई सीख को इंस्टॉल कीजिए, तभी जिंदगी सही और सरल चलेगी, बिना हैंग हुए। अपनी समस्याओं का कारण जानिए, और उन्हें खत्म कीजिए। केवल कुछ विचारों को छोड़ना है और कुछ नए विचार को अपनाना है, जिससे नए विश्वास और मूल्य बनेंगे और फिर नए कर्म होंगे और नए फल मिलेंगे।

आवश्यकता है

भगवान पार्श्वनाथ धाम काकोरी, लखनऊ के लिये आवश्यकता है पुजारी की जिसे कम्प्यूटर का ज्ञान हो। आवास की व्यवस्था मिलेगी। भोजन स्वयं को बनाना होगा। वेतन योग्यतानुसार,

सम्पर्क-
9452017984, 7007783995

अनमोल वचन

- पुण्य का उदय तो वो है जो विकल्प भी न उत्पन्न होने दें।
- साथी वो है जो लघुता कभी न खोए।
- विपरीत विचार अर्थात महाविकार।
- पुण्य सब करा देता है पाप सब हर लेता है।
- खुशी से किये काम सदा आराम देते हैं।
- आसमान की ओर देखिए पर चलिए धरती पर ही।
- अपना हित अपने को आत्मा मानने में ही है।
- सीखने के लिए लघुता और जिज्ञासा चाहिए।
- आत्मा का स्पर्श ही जीव को हर्ष देता है।

SUPERCON
Durable, Hygienic, Strong Quality Products
Take a Step towards better hygine..
Water Tanks
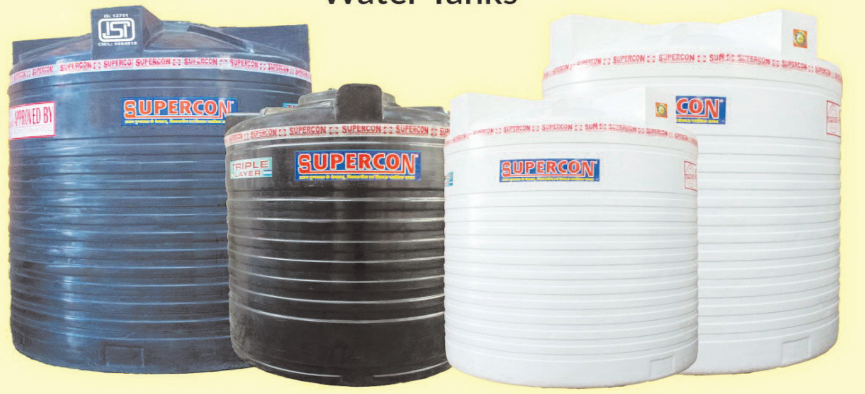

• Easy Installation • Easy To Clean • Safe for Drinking Water

Septic Tanks
• No Maintenance Required
• No Construction Required
• Keeps Environment Clean
Solid Plastic Chakhats
Available in Sizes & Design As Per Requirments
• Water, Termite and Warping Proof
• Maintenance Free • Life 50+ Years
Jain Agencies
17 A, Neel Cottage Maldhaiya, Varanasi 221002
email: jainagencies3@gmail.com +91 88874 58519, 9415225395

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
डायनामिक इंजीनियर्स प्रा. लि.
28, बैरकपुर ट्रन्क रोड
कोलकाता- 700002 'प.बं.'
फोन : 25577534

वर्तमान में बढ़ते मंदिर और मूर्तियों का औचित्य

प्रो. अनेकांत कुमार जैन,
नई दिल्ली

जैन परंपरा में मंदिर और मूर्ति निर्माण का इतिहास बहुत पुराना है। खारवेल के हाथी गुम्फा अभिलेख में कलिंग जिन की मूर्ति वापस लाने का उल्लेख है। वर्तमान में सबसे प्राचीन जैन मूर्ति पटना के लोहनीपुर स्थान से प्राप्त हुई है। यह मूर्ति मौर्यकाल की है और पटना म्यूजियम में रखी हुई है। इसकी चमकदार पालि अभी तक भी ज्यों की त्यों बनी है। लाहौर, मथुरा, लखनऊ, प्रयाग आदि के म्यूजियमों में भी अनेक जैन मूर्तियाँ मौजूद हैं। इनमें से कुछ गुप्तकालीन हैं। श्री वासुदेव उपाध्याय ने लिखा है कि मथुरा में 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर की एक मूर्ति मिली है जो कुमारगुप्त के समय में तैयार की गई थी। वास्तव में मथुरा में जैनमूर्ति कला की दृष्टि से भी बहुत काम हुआ है। श्री रायकृष्णदास ने लिखा है कि मथुरा की शुंगकालीन कला मुख्यतः जैन सम्प्रदाय की है। खण्डगिरि और उदयगिरि में ई. पू. 188-30 तब की शुंगकालीन मूर्ति शिल्प के अद्‌भुत चातुर्य के दर्शन होते हैं। वहाँ पर इस काल की कटी हुई सौ के लगभग जैन गुफाएं हैं जिनमें मूर्ति शिल्प भी है। दक्षिण भारत के अलगामलै नामक स्थान में खुदाई से जो जैन मूर्तियाँ उपलब्ध हुई हैं उनका समय ई. पू. 300-200 के लगभग बताया जाता है। उन मूर्तियों की सौम्याकृति द्रविड़कला में अनुपम मानी जाती है। श्रवणबेलगोला की प्रसिद्ध गोमटेश बाहुबली मूर्ति तो संसार की अद्‌भुत वस्तुओं में से है। वह अपने अनुपम सौंदर्य और अद्‌भुत शांति से प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है।

वर्तमान में यह एक सुखद सूचना है कि पहले की अपेक्षा कहीं अधिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हो रहे हैं और मूर्तियों की स्थापनाएं ज्यादा हो रहीं हैं। पहले एक एक छोटे छोटे से कार्य के लिए दान राशि बहुत मुश्किल से एकत्रित होती थी किन्तु अब वो बात नहीं है, बल्कि कितने ही स्थानों पर दान एकत्रित करने के मुख्य उद्देश्य से पंचकल्याणक करवाये जा रहे हैं। पहले शहर छोटे होते थे, अतः एक मुख्य मंदिर ही पूरे शहर के लिए आस्था का केंद्र होता था, किन्तु जैसे जैसे नगरों का विस्तार प्रारम्भ होता गया और नई नई कालोनियों का निर्माण होता गया, उसी शहर में नए मंदिरों की आवश्यकता महसूस हुई। नित्य देव दर्शन के संकल्पों के कारण और मूल मंदिर दूर होने के कारण नवीन जिनालयों का निर्माण एक आवश्यकता बनता चला गया और उनके निमित्त से धर्म प्रभावना भी बढ़ती चली गई। इस पर मूल पुराने मंदिरों में उपस्थिति भी निरंतर कम होती चली गई और उधर से यह स्वर भी ध्वनित होते रहे कि नए के कारण ऐसा हुआ। सवाल सिर्फ नए मंदिरों का नहीं है और नई मूर्तियों का नहीं है। आवश्यकता और धर्म प्रभावना के निमित्त इनके नवीन निर्माण के प्रति सवाल उठाना भी पाप लगता है किन्तु जहाँ मंदिर और मूर्ति की आवश्यकता नहीं है, वहाँ सिर्फ अन्य प्रयोजनों से मूर्तियाँ स्थापित करना भी बहुत अधिक तर्क संगत प्रतीत नहीं होता है।

विचार कीजिये क्या मूर्ति प्रतिष्ठा का जब मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हो तो क्या वह उचित है ?

1. धनसंग्रह
2. मान प्रतिष्ठा
3. प्रतिस्पर्धा
4. कब्जा/आधिपत्य
5. आसपास की प्रॉपर्टी के दाम बढ़ाना
6. प्रदर्शन
7. काले धन का निवेश इत्यादि

अत्यधिक मंदिर मूर्ति से उत्पन्न समस्याएं -

1. अव्यवस्था
2. बहुमान में कमी/अवमानना
3. प्रत्येक मूर्ति पर नियमानुसार पूजन अभिषेक में कमी
4. श्रावक वर्ग का विभाजन
5. साधु वर्ग के मतभेद, विभाजन
6. वास्तु आदि अन्य नियमों की अवहेलना
7. भक्तों की संख्या में कमी
8. भावों और विशुद्धि में कमी

कुछ सुझाव -

1. नियम विरुद्ध जिन मंदिरों के निर्माण से परहेज करें ।
2. जो नियम से दर्शन पूजन अभिषेक आदि का नियम ले उन्हें प्रतिष्ठा महोत्सवों में पात्र के रूप में चयन किया जाय ।
3. जहां बहुत अधिक आवश्यकता है वहाँ ही नए मंदिर का निर्माण हो, पुराने मंदिरों के जीर्णोद्धार पर अधिक ध्यान दिया जाय।

4. एक ही स्थान पर मूर्तियों की प्रतिष्ठा इतनी ज्यादा संख्या में न हो कि उनका महत्त्व कम हो जाय ।
5. प्रतिष्ठा का एक मात्र उद्देश्य धन संग्रह न हो।
6. प्रतिष्ठा आदि के लिये अब कुछ ऐसे नियम भी बनाने चाहिये कि दूसरी नवीन प्रतिमा की स्थापना का अधिकार उसे ही होगा जो कम से कम सौ शिक्षण संस्कार शिविर लगातार कम से कम 500-1000 नए भक्त तैयार कर लें।
7. भगवान् बढ़ते रहें और भक्त घटते जाएँ यह अनुपात भविष्य में बहुत घातक सिद्ध हो सकता है।

वैकल्पिक व्यवस्था भी रही है -

जिस प्रकार शास्त्रों में मूर्ति और मंदिर निर्माण की लगभग सभी जगह बहुत प्रशंसा की गई है, उसकी प्रेरणा दी गई हैं और कहा गया है कि -

कुत्थुं भरिदलभेत्ते जिणभवणे जो
ठवेइ जिणपणिमं।
सरिसवमेत्तं पि लहेइ सो
णरो तित्थयरपुण्णं।।
जो पुण जिणिंदभवणं समुण्णयं
परिहि-तोरणसमग्गं।
णिम्मावइ तस्स फलं को
सक्कइ वण्णिउं सयलं।।

अर्थात् जो मनुष्य कुथुंम्भरी (धनिया) के दलमात्र अर्थात् पत्र बराबर जिनभवन बनवाकर उसमें सरसों के बराबर भी जिनप्रतिमा को स्थापित करता है, वह तीर्थंकर पद पाने के योग्य पुण्य को प्राप्त करता है, तब जो कोई अति उन्नत और परिधि, तोरण आदि से संयुक्त जिनेन्द्र भवन बनवाता है, उसका समस्त फल वर्णन करने के लिए कौन समर्थ हो सकता है? वहीं शास्त्रों में ऐसे प्रमाण भी हैं जो ज्यादा मूर्ति निर्माण और उसकी पूजा के अतिरेक को संयमित करने में हमारी मदद कर सकते हैं - जयधवला टीका में लिखा है - अणंतेसु जिणेसु एयवंदणाए सव्वेसिं पि वंदणुववत्तीदो। अर्थात् एक जिन व जिनालय की वंदना से सबकी वंदना हो जाती है। सागार धर्मामृत में पंडित आशाधर जी कहते हैं -

ये यजंते श्रुतं भक्तया,
ते यजघ्तेऽजसा जिनम।
न किंचिदंतरं प्राहुराप्ता
हि श्रुतदेवयोः।।

जो पुरुष भक्ति से जिनवाणी को पूजते हैं, वे पुरुष वास्तव में जिन भगवान् को ही पूजते हैं, क्योंकि सर्वज्ञदेव जिनवाणी और जिनेंद्रदेव में कुछ भी अंतर नहीं करते हैं। आचार्य योगेंदु देव कहते हैं -

देउ ण देउले णवि सिलए
णवि लिप्पइ णवि चित्ति।
अखउ णिरंजुण णाणमउ
सिउ संठिउ सम-चित्ति।।

आत्मदेव देवालय में नहीं हैं, पाषाण की प्रतिमा में भी नहीं है, लेप में नहीं है, चित्राम की मूर्ति में भी नहीं है। वह देव अविनाशी है, कर्म अंजन से रहित है, केवलज्ञान कर पूर्ण है, ऐसा निज परमात्मा समभाव में तिष्ठ रहा है। यही आचार्य योगसार में कहते हैं कि

तिथहिं देवलि देउ णवि
इम सुइकेवलि वुत्तु।
देहा-देवलि देउ जिणु एहउ
जाणि णिरुतु।।

श्रुतकेवली ने कहा कि तीर्थों में, देवालयों में देव नहीं हैं, जिनदेव तो देह-देवालय में विराजमान हैं। बोधपाहुड की टीका में कुछ उद्धहारण दिए हैं -

न देवो विद्यते काष्ठ न पाषाणे न मृण्मये।
भावेषु विद्यते देवस्तस्माद्भावो हि कारणं।।

काष्ठ की प्रतिमा में, पाषाण की प्रतिमा में अथवा मिट्टी की प्रतिमा में देव नहीं है। देव तो भावों में है। इसलिए भाव ही कारण है।।

भावविहूणउ जीव तुहं जइ
जिणु बहहि सिरेण।
पत्थरि कमलु कि निप्पजइ
जइ सिंचहि अमिएण।।

हे जीव ! यदि भाव रहित केवल शिर से जिनेंद्र भगवान् को नमस्कार करता है तो वह निष्फल है, क्योंकि क्या कभी अमृत से सींचने पर भी कमल पत्थर पर उत्पन्न हो सकता है।।

उपसंहार - मेरा विनम्र अनुरोध है कि इस आलेख को जिन मंदिर मूर्ति निर्माण के विरोध में न समझा जाय। उसकी महिमा और उपयोगिता असंदिग्ध है। किन्तु अतिरेकवशात उसमें कुछ विसंगतियां उत्पन्न होती जा रहीं हैं, उन पर भी विचार बहुत जरूरी हो गया है। मैं स्वर्ण की और बहुमूल्य प्रतिमाएं स्थापित करने की अनुमोदना करता हूँ, किन्तु उसकी सुरक्षा को लेकर भी चिंतित रहता हूँ। उसके कारण उसे तालों में बंद रखना होता है, ज्यादा सार्वजनिक करने में भी भय रहता है। कई तरह के प्रतिबन्ध लगाने ही होते हैं। अतः उस निर्माण का जो मूल प्रयोजन था कि लोगों को दर्शन मिलें, वीतराग भाव का विकास हो, उसमें कुछ बाधा सी दिखती है। वैसी बाधा पाषाण की प्रतिमा में नहीं आती, अतः कुछ चिंता होती है। गिरनार, पावागढ़ आदि लोकतंत्र में भी हमारी आँखों के सामने हमसे छीन लिए गए हैं, सम्मेद शिखर तक खतरे में है। कभी कभी तो लगता है कि कहीं हम करोड़ों रूपए खर्च करके अन्य धर्मों के लिए तो नए तीर्थ नहीं बना रहे? जिस तेजी से जनसंख्या दर हमारी कम हो रही है हम उसकी दूनी रफ्तार से नवीन तीर्थों का निर्माण कर रहे हैं। जैन मंदिर यदि नए जैन बनाने में कारगर होते तो भी उनकी अधिक उपयोगिता हो सकती थी, किन्तु अधिकांश जगह हालत ये है कि नए छोड़िये पुराने भी कायम रखना कठिन हो रहा है। हम कोई ऐसे कार्य नहीं कर पा रहे हैं जिनसे धार्मिकों में वृद्धि हो प्रत्युत आपसी संघर्ष के दुष्परिणाम स्वरुप अपने भी बिछुड़ रहे हैं। मंदिर धर्म और ज्ञान क्रांति के केंद्र बनने चाहिए तो वे कलह क्रांति के गढ़ बनते जा रहे हैं। अब हमें आचार्य समन्तभद्र का एक ही सूत्र 'न धर्मो धार्मिकैः विना' की माला जपनी चाहिए, मैं सोचता हूँ उन्होंने 'न धर्मो मंदिरैः विना' क्यों नहीं लिखा ? उन्हें पता था चेतन तीर्थों के बिना अचेतन तीर्थों का कोई खास औचित्य नहीं है अतः तीर्थों का एक उद्देश्य यह भी होता है कि धर्मी जनों की वृद्धि हो। यदि यह उद्देश्य कहीं खो गया है तो उसे पुनर्जीवित किया जाय तभी नए तीर्थों और मूर्तियों का औचित्य ज्यादा सिद्ध होगा।

बाजार में धर्मात्मा बन जाओ तो मंदिर का धर्म भी काम आ जाएगा

-निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

शुभम जैन 'पृथ्वीपुर'

महाराजपुर, सागर, 02 जून 2025। हम एक अच्छा कार्य करके बैठ जाते हैं, नहीं एक अच्छा कार्य करने से तुम्हारी जिंदगी अच्छी नहीं होगी। आंखों से अच्छा कार्य करने से तुम्हारी जिंदगी अच्छी नहीं होगी, कान तो बुरा कार्य कर रहे हैं। कान अच्छा कार्य कर रहे हैं, हाथों से बुरा कार्य कर रहे हो। हाथ अच्छा कार्य कर रहे हैं, पैर बुरे कार्य के लिए जा रहे हैं। एक अच्छा कार्य करने से तुम्हारी जिंदगी अच्छी हो जाएगी, ये मत समझना। सब कुछ द्रव्य, गुण, पर्याय, मन वचन काय सब कुछ अच्छा करना पड़ेगा। काया तुम्हारी अच्छी है, शुद्ध सोला के कपड़े पहने हो लेकिन मन बिगड़ा है तो मंदिरों में भी कर्म बंध होगा। काया शुद्ध है तो मन भी शुद्ध होना चाहिए। मन भी शुद्ध है, काया भी शुद्ध है लेकिन वचन खराब है तो भी तुम्हें कोई अच्छा कहने वाला नहीं। सुबह अच्छा निकल जाए, शाम को खोटे कार्य कर लो। एक साल अच्छा निकाल दो, दूसरा साल बुरा तो भी तुम्हारी जिंदगी अच्छी बनने वाली नहीं।

मंदिर में धर्मात्मा तो सभी बने रहते हैं लेकिन बाजार में धर्मात्मा बन जाओ तो मंदिर का धर्म भी काम आ जाएगा। पूरे क्षेत्र में नियम होना चाहिए कि मुझे जो पाप नहीं करना है, वह मैं तीन लोक में कहीं भी चला जाऊं, वह पाप मेरा त्याग है मैं करूंगा ही नहीं। जब तुम नरकों में थे तब तुमने कहा था कि बस भगवन बहुत हो गया, मैं सौगंध करता हूँ, मैंने जो पाप किए हैं, इस बार मुझे माफ कर दो, मेरे से अतीत में गलती हो गयी, अब मैं गलती नहीं करूंगा। बस मुझे एक बार मनुष्य पर्याय दे दो मैं 8 वर्ष का होते ही सीधे मुनि दीक्षा लूँगा। कोई नीच कुल में जन्म लेकर शराब पी रहा है तो कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन जैन होकर के शराब पी रहा है, ये है बड़ी बात क्योंकि उनको तो संस्कार ही नहीं है। कर्म बहुत दयालु है जितने अपन कर्म करते हैं उसका 10 वाँ हिस्सा भी कर्म सजा नहीं देता। कर्म बार-बार निकाल कर हमें अच्छे दिन देता है। जब जब अपन सुखी हुये, हम धर्म से दूर भाग गए। महानुभाव जिंदगी भर भगवान का अभिषेक नहीं करने वाले संकट की घड़ी में भगवान के पैर धोते हुए पाए जाते हैं। फिर कर्म बहुत निर्दयी हो जाता है या तो जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक करो या फिर कर्म तुम्हें गधे का अभिषेक करा देगा। जन्म जन्म का पुण्य उदय में आता है तब जैन कुल मिलता है, तब जिनेंद्र भगवान मिलते है, तब जिनेंद्र भगवान का अभिषेक करने का भाव होता है। क्यों न अपन ये संकल्प करें कि जब-जब मेरे सुख के दिन आएंगे, सुख का दिन मैं मंदिर में व्यतीत करूंगा। सामने पैसा हो और फिर धर्म करने का भाव आ जाए तो तुम कल भी सुखी थे, आज भी सुखी हो और आगे भी सुखी रहोगे।

आचार्य प्रमुख सागर जी महाराज ससंघ का धुलियान में मंगल प्रवेश

नागालेण्ड के प्रमुख नगर डीमापुर में ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता की ओर 2025 के चातुर्मास हेतु अनवरत विहाररत, अहिंसा तीर्थ प्रणेता, महान दिगम्बर जैनाचार्य 108 श्री प्रमुख सागर जी महाराज (ससंघ 13 पिच्छी) का गुरूवार 05 जून 2025 को सैकड़ों धर्मावलम्बियों की उपस्थिति में प्रातः लगभग 8:00 बजे पश्चिम बंगाल के प्रमुख नगर धुलियान में भव्य मंगल प्रवेश हुआ।

तरुण सागरम् अहिंसा संस्कार पदयात्रा

नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल
औरंगाबाद

औरंगाबाद, 29 मई। अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज की उत्तराखण्ड के बद्रिनाथ से हरिद्वार से उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरपुर तक तरुण सागरम् अहिंसा संस्कार पदयात्रा चल रही है। विहार दरम्यान उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि हक की बात बोलने के लिए कलेजा चाहिए, तलवे चाटने वाले के लिये, एक जीभ ही बहुत है। यह जिन्दगी एक अमानत है। सावधान रहिये! चित्त की चौकसी ही परम ज्योति को पाने का द्वार है। अभी तुम एक पत्थर हो। परमात्मा के घटते ही सब पत्थर प्रतिमाएं बन जाते हैं। तुम प्रतिमा बन सकते हो

क्योंकि तुममें प्रभु बनने की प्रतिभा है। प्रभु बनना है तो मन को माजना होगा। केवल तन को माजना ही पर्याप्त नहीं है। तन को क्यों माजना? तन को माजना तो ऐसा ही है जैसे - कोयला धोया दूध से, निकला इतना सार। कोयला तो उजला नहीं, दूध गया बेकार। मन को माजो तो कोई बहादुरी होगी। मन को माज कर ही तो कोई वीर, अतिवीर और महावीर बन पाता है। सिकन्दर जैसे विश्व विजेता तो इस पृथ्वी पर बहुत हुए, लेकिन मन के किले पर फतह करने वाले महावीर तो कुछेक ही है। सिकन्दर ''विश्व-विजेता'' का प्रतीक है तो महावीर ''आत्म-विजय'' के प्रतीक है। सिकन्दर और महावीर में बस इतना ही अन्तर है कि एक विश्व विजेता है परन्तु स्वयं से हारा है। दूसरा आत्म विजेता है मगर विश्व का मसीहा है। जो जाग गया, वह महावीर बन गया और जो ना जाग पाया, सोये सोये जिया और सोये सोये ही मर गया, वह सिकन्दर बन गया। कहीं आप सिकन्दर तो नहीं है? क्योंकि सच्चाई के रास्ते पर चलने में ही फायदा है क्योंकि सत्य की राह पर भेड़ों की भीड़ नहीं मिलती।

श्रमण संस्कृति संस्कार शिविर समापन पर मेधावी हुए सम्मानित

ललितपुर। श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर जयपुर द्वारा आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महाराज के आशीर्वाद एवं निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागर महाराज की प्रेरणा से नगर में चल रहे श्रमण संस्कृति संस्कार शिविर का आज दिगम्बर जैन पंचायत समिति के तत्वावधान में पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अटा मंदिर में समापन हुआ। जिसमें प्रतिभावान मेधावी छात्रों एवं आमंत्रित विद्वानों को सम्मानित किया गया। वक्ताओं ने भविष्य के संस्कारों के लिए ऐसे धार्मिक शिविरों को पहली सीढ़ी बताया।

नगर के विभिन्न जिनालयों में सम्पन्न हुए। श्रमण संस्कृति संस्कार शिविर का समापन आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महाराज के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित कर श्रेष्ठीजनों ने किया। शिविर संयोजक डा. आलोक मोदी ने प्रगति आख्या देते हुए शिविर की उपलब्धियों से अवगत कराया। शिविर में बालबोध पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध, छहढाला, इष्टोपदेश, द्रव्य संग्रह, तत्वार्थ सूत्र, श्रावकाचार, सर्वार्थ सिद्धि, जीवकाण्ड की परीक्षाओं में सफल शिविरार्थियों को पंचायत समिति के पदाधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया। शिविर के अनुभव श्रीमती आरती जैन, गुणमाला जैन, संगीता सिंघई, आन्या जैन, आगम जैन ने बताए। इस मौके पर जैन पंचायत अध्यक्ष डा. अक्षय टड़ैया, पूर्व अध्यक्ष अनिल जैन अंचल, मंत्री कैप्टन राजकुमार जैन, शीलचन्द अनौरा, मीडिया प्रभारी अक्षय अलया, सतीश नजा, मनोज जैन बबीना, अजय जैन गंगवारी, धन्यकुमार जैन, सुवेन्दु जैन, प्रमोद जैन पाय, सुमित जैन खजुरिया, डा. मुकेश शास्त्री, डॉ. राजेश शास्त्री, डा. सचिन जैन, शिक्षक पुष्पेन्द्र जैन, वीणा जैन, अनीता मोदी आदि मौजूद रहे।

जैन पंचायत ने आचार्य सुबल सागर महाराज से किया चातुर्मास हेतु निवेदन – चातुर्मास को लेकर दिगम्बर जैन पंचायत ललितपुर के पदाधिकारियों के प्रतिनिधि मण्डल ने ग्वालियर म. प्र. अन्तर्गत डबरा में विराजमान प्रभावक जैनाचार्य सुबलसागर महाराज ससंघ को श्रीफल अर्पित कर आशीर्वाद ग्रहण किया। इसके उपरान्त ग्वालियर में विराजमान मुनि सौम्यसागर महाराज ससंघ के चरणों में श्रीफल अर्पित कर चातुर्मास हेतु निवेदन किया। प्रतिनिधि मण्डल में महामंत्री आकाश जैन, संयोजक सनत जैन खजुरिया, अभिनंदनोदय तीर्थ प्रबंधक अशोक जैन दैलवारा, निर्मल जैन एडवोकेट प्रमुख रूप से शामिल रहे।

रायपुर में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांति सागर महाराज का आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव सौल्लास संपन्न

कैलाश रारा, रायपुर

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के द्वारा परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य 108 श्री शांति सागर महाराज का दिनांक (13 अक्टूबर 2024 से 3 अक्टूबर 2025 तक) वर्ष भर संपूर्ण भारत में आचार्य पद प्रतिष्ठापन महोत्सव 2024-25 पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाने का निश्चय किया गया है। आयोजन के इसी संदर्भ में शनिवार दिनांक 31.5. 2025 श्रुत पंचमी को रायपुर (छत्तीसगढ़) के खंडेलवाल दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका अन्तर्मति माताजी के संघ सानिध्य में आचार्य गुरुवर शांति सागर महाराज का आचार्य पद प्रतिष्ठापन महोत्सव पूर्ण भक्ति भाव एवं उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में श्री जी का अभिषेक, शांतिधारा, मां जिनवाणी एवं आचार्य शांति सागर महाराज की पूजन, उनके चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन के पश्चात् श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कैलाश रारा जी ने आचार्य शांति सागर महाराज के जीवन वृत पर विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि आज से 100 वर्ष पूर्व आश्विन शुक्ल ग्यारस सन 1924 को आचार्य शांति सागर महाराज का महाराष्ट्र के समडोली जिला सांगली में चतुर्विध संघ के सम्मुख आचार्य पद प्रतिष्ठापन महोत्सव हुआ था। कार्यक्रम के आगे की श्रृंखला में पूज्य माताजी को शास्त्र भेंट तथा आर्यिका माता जी का मंगल प्रवचन हुआ। कार्यक्रम में विशेष रूप से पंचायत के अध्यक्ष अरविंद बड़जात्या, कोषाध्यक्ष पवन रारा, मर्चंद बाकलीवाल, सुभाष गोधा, निर्मल छाबड़ा, दिनेश काला, अनिल छाबड़ा, मनोज सेठी, प्रियश जैन, संजय जैन एवं महिला मंडल की उपस्थिति उल्लेख रही। मंच का संचालन पंडित नितिन जैन के द्वारा किया गया।

राष्ट्रसंत, सारस्वताचार्य मुनि देवनंदी जी को "चिट्ठी आयी है" पुस्तक समर्पित

एम. सी. जैन, पत्रकार

चिकलठाणा (महाराष्ट्र)। सुविख्यात समाजसेवी, मराठी-हिंदी लेखक, राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक ''जैन गजट'' के प्रतिनिधी एम. सी. जैन की लिखी हिंदी पुस्तक ''चिट्ठी आयी है (पृष्ठ 92) राष्ट्रसंत, प्रज्ञाश्रमण, सारस्वताचार्य, णमोकार तीर्थप्रणेता मुनि देवनंदीजी को 29 मई 2025 को णमोकार तीर्थ (महाराष्ट्र) में पत्रकार एम. सी. जैन, इंजि. प्रतीक दिनेश पाटणी, वरुणभाई ने समर्पित की। आचार्य मुनि देवनंदी जी अवलोकन कर कहा ''चिट्ठी आयी है'' एक अद्भुत साहित्य रचना है। आपस में जो पत्र व्यवहार होता है, उस माध्यम से भी युवकों को एक संदेश जाता है।

हावड़ा में मनाया गया श्रुतपंचमी महापर्व

धर्म नगरी उत्तर हावड़ा (डबसन) में परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री 105 सौम्यनंदनी माता जी की प्रथम शिष्या गणिनी आर्यिका श्री 105 सुयोग्यनंदनी माता जी ससंघ के सानिध्य में पालकी यात्रा का भव्य आयोजन किया गया।

जैनदर्शन विभाग में श्रुतपंचमी प्राकृत दिवस संगोष्ठी

दिल्ली। श्रुत पंचमी पर्व और प्राकृत भाषा दिवस की पूर्व संध्या पर श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के जैन दर्शन विभाग में प्रो. वीरसागर जी की अध्यक्षता में श्रुत पंचमी प्राकृत भाषा दिवस संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रो. अनेकान्त जी ने कहा कि हमने स्वाध्याय में आम्नाय नामक भेद की बहुत उपेक्षा की है जिसमें मूल पाठों को दुहराने की परंपरा थी। वैदिक परंपरा में चारों वेद इसलिए सुरक्षित हैं क्योंकि वहाँ मूल पाठों को प्रतिदिन दोहराने की परंपरा आज भी विद्यमान है। बहुत मुश्किल से उपलब्ध षट्खंडागम आदि मूल भगवान् की वाणी को दुहराने और याद करने की परंपरा न श्रावकों में है न साधुओं में है। कितने ही जिनालय भी ऐसे हैं जहाँ षट्खंडागम की प्रकाशित प्रति भी उपलब्ध नहीं है। ऐसी प्रवृत्तियों से ही मूल श्रुत नष्ट होता है। अध्यक्षीय वक्तव्य देते प्रो. वीरसागर जी ने कहा कि आचार्य विद्यानंद जी कहते थे कि हम लोग रोटी पानी के कारण जिंदा नहीं हैं हम लोग ज्ञान के कारण जिंदा हैं। भारत शब्द में भा का अर्थ ज्ञान है अर्थात् जो ज्ञान में रत रहता है वह भारत कहलाता है। भारत ज्ञान के कारण प्रसिद्ध है और इसमें जैन दर्शन का बड़ा योगदान है क्योंकि वह सम्यग्ज्ञान की बात करता है। हम लोग भारत को माँ कहते हैं और सैनिक भारत माँ के लिए अपनी जान भी कुर्बान कर देते हैं, उसी प्रकार जिनवाणी को हम माँ कहते हैं। हमें भी सैनिकों की भांति इसकी रक्षा में अपना तन मन धन समर्पित कर देना चाहिए। इस अवसर पर अनेक शोधार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये और जैन दर्शन पढ़ कर अपने जीवन में आये बदलाव को भी बताया। इस अवसर पर सर्वप्रथम श्रुत पीठ पर वेष्टन युक्त जिनवाणी को विराजमान किया गया और विभाग के आचार्यों द्वारा प्रकाशित श्रुत साधना के समस्त शोध आलेख एवं ग्रंथों की प्रदर्शनी भी सभी के लिए लगाई गई। सभा का कुशल संचालन शोध छात्र प्रशांत जैन ने किया।

श्रुत पंचमी पर्व पर पालकी में धार्मिक जैन ग्रंथों को विराजमान करके निकाली भव्य शोभा यात्रा

जिनवाणी के संरक्षण का दिवस श्रुत पंचमी - मुनिश्री

मड़ावरा (ललितपुर)। वर्णीनगर मड़ावरा में संत शिरोमणि आचार्य श्रेष्ठ 108 विद्यासागर महाराज एवं नवाचार्य श्री समय सागर महाराज के परम यशस्वी तपस्वी शिष्य मुनिश्री प्रबोध सागर, मुनिश्री शैल सागर, मुनिश्री अचल सागर महाराज के पावन सानिध्य में श्रुत पंचमी पर्व बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कस्बा मडावरा के पुराना बाजार स्थित जैन नया मंदिर से जैन धार्मिक षट्खण्डागम ग्रन्थों को पालकी में विराजमान करके नगर में शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा नगर में भ्रमण करते हुए श्री महावीर विद्याविहार पहुंची।

धर्मसभा के पूर्व श्रावक श्रेष्ठियों ने आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महाराज के चित्र का अनावरण किया एवं जिनवाणी पालकी के श्रुत आराधकों ने दीप प्रज्वलित किया। बताते चलें आचार्य श्री विद्यासागर संस्कार वर्णी पाठशाला एवं महिला मंडल द्वारा अष्ट द्रव्य सजाई गई एवं पालकी को सजाया गया। पूज्य मुनिश्री ने जिनवाणी पूजन कराया, जिसमें समाज के व्रती, विद्वानों द्वारा स्थापना की गई और समाज गौरव डॉ. विरधीचंद्र जैन, समाज श्रेष्ठी पाठशाला परिवार के अध्यक्ष डॉ. राकेश जैन सिंघई, सुधीर जैन सिंघई, सन्तोष जैन बजाज, साहिल बजाज, नीलेश जैन, मयूराज जैन, शीलचंद्र जैन, आमोद जैन दुकान वाले ने अर्घ्य समर्पित किए। इस दौरान धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री प्रबोध सागर ने कहा कि अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के मोक्ष जाने के पश्चात 643 वर्ष तक श्रुत परम्परा यानि सुनने की परम्परा चली आ रही है। जैनाचार्यों ने जब यह अनुभव किया शिष्य वर्ग की स्मरण शक्ति उत्तरोतर क्षीण होती जा रही है। जिनवाणी को कैसे सुरक्षित रखा जाये। इसको लिपिबद्ध होना आवश्यक है। आचार्य धरसेनाचार्य के मन में श्रुत संरक्षण का विचार आया। आचार्य पुष्पदंत और भूतबली महाराज ने जिनवाणी लेखन प्रारंभ किया। पुष्पदंत महाराज ने पांच खण्ड मूल रूप से लिखे और मुनिश्री भूतबली ने छह खण्ड विस्तार से लिखे। इस प्रकार आज के दिन ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन चतुर्विध संघ सहित कृति क्रम पूर्व महापूजन की गई। इस दिवस को श्रुत पंचमी पर्व के रूप में मनाया जाने लगा। श्रुत पंचमी का पर्व श्रुत आराधना का पर्व है। कार्यक्रम का संचालन चेतन ने किया।

धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर सम्मान एवं पुरस्कार वितरण समारोह 2025 संपन्न

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

प्रतापनगर सेक्टर 3, जयपुर 1 जून 2025। दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल द्वारा आयोजित ग्रीष्म कालीन संस्कार शिक्षण शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह, प्रतापनगर सेक्टर-3 स्थित कृष्णा गार्डन के विशाल प्रांगण में सानंद सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर इकाई अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार झांझरी ने बताया कि समारोह का शुभारंभ छोटे-छोटे शिविरार्थियों द्वारा मंगलाचरण से किया गया। चित्र अनावरण - श्रीमती राजरानी बज, मातुश्री विजय अनीता बज एवं पूजा ग्रुप प्रतापनगर सेक्टर-3 द्वारा किये गये। श्रीमती मधु जैन मंदिर एवं संभाग महिला अध्यक्ष ने बताया कि जिनवाणी स्थापना-श्रीमती चांददेवी अजमेरा, ज्ञानदीप प्रज्ज्वलन-सुशील कुमार मैना देवी

कासलीवाल ने किया। इस समारोह के मुख्य अतिथि एवं पुरस्कार वितरण कर्ता श्री गोपाल जी जैन, श्रीमती कमला देवी निवाई वाले रहे। कैलाश चंद जैन मलैया सांगानेर संभाग अध्यक्ष ने बताया कि आज के इस समारोह के अध्यक्ष राष्ट्रीय महासचिव सुरेन्द्र कुमार पांड्या रहे। राजस्थान अंचल अध्यक्ष अनिल कुमार जैन रिटायर्ड आईपीएस, महिला अंचल अध्यक्ष श्रीमती शकुंतला विन्दायका, महामंत्री महावीर कुमार बाकलीवाल, कार्याध्यक्ष डॉ. णमोकार जैन, महिला मंत्री उर्मिला जैन, कोषाध्यक्ष मंजु जैन, संगठन मंत्री, आशीष पाटनी, संभागीय महिला मंत्री दीपा गोधा और टोंक संभाग अध्यक्ष नवीन कुमार जैन आदि ने अपनी सम्माननीय उपस्थिति दी। डॉ. अरविन्द कुमार जैन ने बताया कि इस अवसर पर सांगानेर संभाग के समस्त इकाइयों के अध्यक्ष-मंत्रियों, मंदिर के अध्यक्ष-मंत्रियों और शिविर-प्रभारियों को मंच पर आमंत्रित करके इनके श्रेष्ठतम कार्यों हेतु सम्मानित किया गया। शिविर प्रभारी रश्मि एवं परिधि पाटनी ने बताया कि छोटे- छोटे बच्चों ने मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां प्रस्तुत कीं। संस्कार शिविर में शिक्षण कराने वाले विद्वानों में ब्रम्हचारी डॉ. अनिल कुमार जैन प्राचार्य, श्रीमती कमलेश पाटोदी, सुप्रिया जैन, रेणु जैन, ईला जैन शाह, पंडित सुदीप गोयल, पंडित अभिषेक शास्त्री को सभी सभासदों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया। डॉ. बी सी जैन, राष्ट्रीय धार्मिक निदेशक ने बताया कि शिविरार्थियों में प्रथम, द्वितीय वालों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया और शेष सभी को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अंत में इकाई अध्यक्ष झांझरी जी ने दस दिवसीय शिविर में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग करने वालों का आभार व्यक्त किया। कैलाश चंद जैन मलैया ने बताया कि कीर्ति नगर इकाई के अध्यक्ष श्री कैलाश चंद जी गोधा ने कार्यक्रम से प्रभावित होकर 5100/- राशि की घोषणा की और सांगानेर संभाग की इकाइयों से पधारे अध्यक्ष-मंत्री, मंदिर के अध्यक्ष-मंत्री और शिविर प्रभारियों का आभार व्यक्त किया। अंत में शांति पाठ के साथ सभा विसर्जित की गई। अल्पाहार के पैकेट वितरित कर, ठंडे पेय का सभी ने लाभ लिया।

जिनवाणी माता की भव्य शोभायात्रा में उमड़े जैन बंधु

महावीर सरावगी, संवाददाता, नैनवां, बूंदी

नैनवां, 31 मई, 2025। सकल दिगंबर जैन समाज के सानिध्य में प्रातःकाल 8:00 बजे को कोटीया जी के जैन मंदिर से भव्य जिनवाणी माता की शोभायात्रा प्रारंभ हुई, जिसमें आगे नन्हे मुन्ने बालक बालिकाएं पचरंगी ध्वज हाथों में लेकर जिनवाणी माता की जय जयकार करते हुए चल रहे थे। उनके पीछे बैंडबाजे के साथ महिलायें लाल रंग की साड़ियों में अपने सिर पर जिनवाणी माता लेकर चल रही थीं। पुरुष वर्ग युवा सफेद लिबास में जय जयकारों के साथ चल रहे थे, इनके पीछे पालकी में जिनवाणी माता विराजमान कर दोनों तरफभक्त चवर ढोल रहे थे। जगह-जगह पर महिलाओं द्वारा नृत्य के साथ भजनों की प्रस्तुतियां दे रही थीं -

मेरी प्राणों से प्यारी मां जिनवाणी तुम्हें हर दिन सिर पर बिठाएंगे मेरा प्यारा महावीरा भक्तों पर

क्या जादू कर गया शुद्ध पंचमी महोत्सव आया खुशियां हम मनायेंगे। यह शोभायात्रा गढ़ चौक, सदर बाजार, बड़ा जैन मंदिर, मालदेव चौक, दपोला मार्ग होते हुए टोडा पोल चंद्रप्रभु नसिया पहुंचा वहां पर जिनालय में सभी भक्तों ने भगवान के दर्शन कर वापस शोभायात्रा कोटिया जी के जैन मंदिर पहुंची। चंद्रप्रभु नसिया पर सभी भक्तों को फल वितरण किए गए। दिगंबर जैन समाज प्रवक्ता महावीर सरावगी ने जानकारी देते हुए बताया कि जैन समाज के श्रेष्ठि विनोद बरमुंडा, मोहन मारवाड़ा, ललित जैन, अध्यापक महावीर सरावगी, महावीर मामा, महावीर नासिरदा, कैलाश बजाज, प्रदीप बजाज, नरेंद्र जी शास्त्री, प्रकाश बाबा, प्रियंक सरावगी, पारस नाहरगज, धर्मा मोडीका, रितेश बरमुंडा, बाबूलाल जैन बरमुंडा, सुनील सेठिया, मोनू हरसोडा। महिलाओं में अंजू जैन मोडीका, संगीता मोडीका, रेखा मोडीका, विमल शाह, प्रियंका जैन, वर्षा शाह, गुणमाला सरावगी, विना शाह, विना सरावगी सहित अपार महिलाओं अपार भक्तों के सानिध्य में जिनवाणी माता की भव्य यात्रा निकाली।

आदिनाथ दिगंबर जैन संस्कार शाला से छोटे बच्चों में धर्म के संस्कार उत्पन्न हुए

महावीर सरावगी, संवाददाता

नैनवा जिला बूंदी 28 मई, 2025। 2016 में आर्यिका विशुद्धमति माताजी की प्रेरणा से जैन आदिनाथ दिगंबर जैन संस्कार शाला का शुभारंभ हुआ था। इस पाठशाला में नियमित 30 से 35 छात्र छात्राएं प्रतिदिन पढ़ने को जाते हैं। यह समाचार जैन पाठशाला के छोटे बच्चों को सत्य और अहिंसा के ज्ञान के बारे में है। नैनवां के अग्रवाल दिगंबर जैन बड़े मंदिर में स्थित आदिनाथ दिगंबर जैन संस्कार पाठशाला में छात्र-छात्राएं जैन धर्म की शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। इन बच्चों ने बताया कि उन्हें पाठशाला में जैन धर्म के सिद्धांतों के बारे में सिखाया जाता है, जैसे कि सच्चे बोलना, झूठ न बोलना, रात्रि भोजन नहीं करना, पानी छानकर पीना और भगवान की पूजन विधि पूर्वक करना। इन बच्चों को संस्कारित करने में श्रीमती संगीता जैन मोडीका, अंजु मोडीका, रीना सेठिया, रीना मोदी, उषा ठग, शिल्पा मारवाड़ा रेखा मोडीका का महत्वपूर्ण योगदान है। इन टीचरों द्वारा निशुल्क सेवाएं देकर जैन धर्म संस्कारों का नन्हें मुन्ने बालकों में पौधारोपण किया है, इनकी जितनी भी प्रशंसा समाज द्वारा की जाए वह कम है। यह समाचार जैन धर्म के संस्कारों के महत्व को दर्शाता है और यह बताता है कि कैसे छोटे बच्चों को जैन धर्म के सिद्धांतों के बारे में सिखाया जा सकता है। इस ज्ञान से ही वह समाज के भव्य नागरिकता प्रदान करेंगे।

श्रुतपंचमी पर्व पर हुए विभिन्न धार्मिक आयोजन

रविन्द्र काला, संवाददाता, बून्दी

बूंदी, 2 जून। दिगम्बर जैन खण्डेलवाल (सरावगी) समाज संस्थान की ओर से श्रुत पंचमी पर आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज की परम प्रभाविका शिष्या गणिनी आर्यिका सत्यमति माता व आर्यिका हेमश्री माताजी के सानिध्य में श्रुत पंचमी पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्यिका सत्यमति माताजी ने श्रुति स्कन्धन के माध्यम से श्रुत पंचमी पर्व का महत्व पर प्रकाश डाला। श्रुत पंचमी के अवसर पर सुबह चौगान जैन आदिनाथ भवन से जिनवाणी को पालकी में विराजमान करके शोभायात्रा निकाली जो इन्द्रा मार्केट, अहिंसा सर्किल, कोटा रोड़ होते हुए चौगान जैन मंदिर के आदिनाथ भवन पहुंची। शोभायात्रा में माताजी का संघ आगे चल रहा था। पीछे महिलाएं सिर पर जिनवाणी को लेकर चल रही थीं तथा समाजबंधु पालकी में जिनवाणी को लेकर चल रहे थे। चौगान जैन नोहरा के आदिनाथ भवन में श्री श्रुत स्कन्ध विधान हुआ। विधान की समस्त क्रियाएं पंडित देवेन्द्र जैन, पुण्याशी जैन ने कराई। ब्र. आस्था व प्रीति जैन ने मधुर भजन गाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आयोजित श्रुति यज्ञ विधान में महिलाएं व पुरुषों ने अर्घ्य चढ़ाये। गुरु मां के मुख से भगवान के अभिषेक व शांति धारा की गई। कार्यक्रम के शुरुआत में सकल जैन समाज के संरक्षक ओमप्रकाश बड़जात्या, मंत्री महावीर जैन, कोषाध्यक्ष रामविलास जैन, जिला सरावगी समाज के मंत्री राजेन्द्र छाबड़ा ने आर्यिका माताजी को श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। समाज के मंत्री योगेन्द्र जैन मिन्टू ने बताया कि अभिषेक करने का सौभाग्य महेन्द्र कुमार पाटनी तथा शांतिधारा करने का सौभाग्य संतोष कुमार, राहुल पाटनी, माताजी को शास्त्र भेंट का सौभाग्य सकल जैन समाज महिला मण्डल तथा आर्यिका संघ के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य सरोज जैन, देशना, ऋषिका पाटनी को प्राप्त हुआ। मंडल विधान में सौधर्म बनने का सौभाग्य, रमेश कुमार बड़जात्या तथा कुबेर इन्द्र बनने का सौभाग्य संतोष कुमार, राहुल पाटनी परिवार को मिला। इस अवसर पर राजकुमार जैन, रविन्द्र काला, महिला मण्डल अध्यक्ष चन्द्रेश छाबड़ा, सुधा कासलीवाल सहित हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

तीर्थंकर महावीर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगियों का बहुमान

मुरैना (मनोज जैन नायक)। तीर्थंकर भगवान महावीर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतियोगियों को एक भव्य समारोह के दौरान सम्मानित किया गया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के मुख्य संयोजक डॉ. मनोज जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि बड़े जैन मंदिर जी में धर्म प्रभावना कर रहे जैन मुनिश्री विलोकसागर एवं मुनिश्री विबोधसागर महाराज की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से भगवान महावीर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 300 प्रतियोगियों ने भाग लिया। उनमें से 80 अंक या अधिक अंक प्राप्त करने वाले 105 प्रतियोगियों को उनके प्रदर्शन के हिसाब से पुरस्कार दिए गए। प्रतियोगिता के संयोजक विमल जैन बघपुरा द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन पंचायती बड़ा मंदिर द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में जैन समाज के श्रावक श्रेष्ठी एडवोकेट करनसिंह योगेंद्र कुमार तेलीपाड़ा, राजेंद्र भंडारी, साकेत जैन खड़ियाहार, रविंद्र कुमार सौरभ जैन गौसपुर, एडवोकेट दिनेश जैन, डालचंद जैन बराहाना, पंकज जैन पंकज मेडिकल, दीपक जैन आयरन, प्रेमचंद पंकज जैन वंदना साड़ी, डॉ. मनोज अभिलाषा जैन, विमल अनिता जैन के सौजन्य से सभी प्रतियोगियों को पुरस्कार दिए गए। इस प्रतियोगिता में महावीर पुरा सिसोदिया गली निवासी विपिन गुप्ता के पुत्र अंश गुप्ता को 59 अंक प्राप्त करने पर भी विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मेरे बेटे की कुंडली में ऐसा कौन सा दोष है, जिसके कारण वह मात्र 18 साल की उम्र में नशा करने लगा और क्या उपाय करें? - दीपा जैन, मुम्बई

उत्तर - दीपा जी, बेटे की कुंडली में चाण्डाल दोष व राहु की दशा के कारण ऐसा है, आप चाण्डाल दोष की शान्ति करायें, अवश्य लाभ होगा।

प्रश्न 2. मेरे बेटे की उम्र 8 साल है और उसे सुनने में दिक्कत हो रही है। क्या कुंडली के अनुसार कोई उपाय है - सन्दीप तेवतिया, अजमेर

उत्तर - बेटे को पन्ना रत्न का लॉकेट बुधवार को धारण करायें और णमो सिद्धाणं की माला फेरें, साथ ही बुधवार को हरी सब्जी का सेवन करायें।

प्रश्न 3. मंगल ग्रह की महादशा कुंडली में कितने वर्षो के लिये आती है और यह कैसी रहती है - पायल कोढालिया, कोटा (राज.)

उत्तर - मंगल ग्रह की दशा 7 वर्ष के लिये आती है। कुंडली के अवलोकन के पश्चात् पता चलता है कि वह दशा कैसे रहेगी।

प्रश्न 4. गुरूजी, कुंडली के अनुसार मेरी जन्म राशि कौन सी है? - नीना जैन, मेरठ

उत्तर - कुंडली के अनुसार आपकी कुंडली में चन्द्रमा मेष राशि में है अतः आपकी मेष राशि है।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 8826755078

जैन समाज के मेधावी विद्यार्थियों का महासभा द्वारा भव्य सम्मान समारोह संपन्न

गुवाहाटी (असम), 30 मई 2025। श्री भारतवर्षीय खंडेलवाल जैन महासभा (पूर्वांचल समिति), श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन श्रुत संवर्धिनी महासभा (लोअर असम) एवं गुवाहाटी महिला महासभा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 30 मई, शुक्रवार को गुवाहाटी के श्री परशुराम सेवा सदन, छत्रीबाड़ी (गौशाला के निकट) में एक भव्य और प्रेरणास्पद सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसने न केवल विद्यार्थियों को उत्साहित किया बल्कि उपस्थित समाजजनों में भी गर्व एवं उमंग का संचार कर दिया।

इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य ग्रेटर गुवाहाटी, विजयनगर, रंगिया एवं जागीरोड़ के दिगम्बर जैन समाज के उन मेधावी छात्र-छात्राओं को सार्वजनिक रूप से सम्मानित करना था, जिन्होंने कक्षा 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त कर समाज और परिवार का नाम रोशन किया है।

भव्य आरंभ और गरिमामयी माहौल: कार्यक्रम का शुभारंभ सुबह ठीक 10 बजे दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। यह दीप प्रज्वलन प्रदीपजी एवं मंजूजी गोधा (गुवाहाटी) द्वारा किया गया, जिन्होंने एक प्रतीक के रूप में ज्ञान और उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रकाशित किया। दीप प्रज्वलन के उपरांत कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ, जो मंजू गोधा, कविता बाकलीवाल और अन्य बहनों द्वारा बहुत ही मधुरता और श्रद्धा से प्रस्तुत किया गया।

75 से अधिक मेधावी छात्रों का सम्मान: इस समारोह की सबसे विशेष बात यह रही कि इसमें कक्षा 10वीं और 12वीं में शानदार प्रदर्शन करने वाले 75 से 80 विद्यार्थियों को मंच पर आमंत्रित कर दुपट्टा, पेन सेट, नोटबुक एवं मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावकों की उपस्थिति ने माहौल को और भी गरिमामय बना दिया।

मंच संचालन एवं मुख्य अतिथि के उद्बोधन: कार्यक्रम का संचालन अत्यंत कुशलता के साथ श्रीमती अंजली बिनाइक्या एवं श्रीमती रीतू जैन ने किया। उनकी स्पष्ट वाणी, अनुशासित संचालन शैली एवं आत्मीयता से पूरे कार्यक्रम में एक सकारात्मक ऊर्जा बनी रही।

समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती बिनिता जैन ने अपने उद्बोधन में अपने जीवन के प्रेरणादायक अनुभव साझा करते हुए छात्रों को विभिन्न गुरु मंत्र दिए। उन्होंने मेहनत, समय प्रबंधन, आत्म संयम एवं वैचारिक स्पष्टता जैसे मूल्यों पर बल दिया, जो एक छात्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। सभा के अध्यक्ष डॉ. संतोष जैन काला (सीए) ने स्वागत भाषण के माध्यम से सभी विद्यार्थियों, उनके परिवारजनों, गणमान्य अतिथियों और सहयोगियों का अभिनंदन किया।

कार्यक्रम की एक और उल्लेखनीय विशेषता थी सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ। सरिता सेठी ने अपने मधुर कंठ से भजन प्रस्तुत कर वातावरण को भक्तिमय कर दिया और सभी का दिल जीत लिया। वहीं, कत्थक नृत्य की अत्यंत आकर्षक प्रस्तुति ने उपस्थितजनों को मंत्र मुग्ध कर दिया। इस प्रस्तुति ने न केवल कार्यक्रम में रंग भरे, बल्कि दर्शकों को भारतीय संस्कृति की गहराई से जोड़ दिया।

समारोह के मंच को कुशलता से संचालित करने की जिम्मेदारी कविता बाकलीवाल, सारिका जैन एवं अन्य बहनों को दी गई थी, जिन्होंने संयोजन और अनुशासन का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। उनकी टीम भावना और समर्पण ने कार्यक्रम को सुव्यवस्थित एवं गरिमापूर्ण बनाया।

समारोह के अंत में महासभा के महामंत्री श्री सुभाष बड़जात्या ने उपस्थित सभी अतिथियों, विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने विशेष रूप से उन सभी का आभार व्यक्त किया जो भीषण वर्षा के बावजूद समय पर पहुँचे और कार्यक्रम को सफल बनाया। उन्होंने कहा कि ''समाज की यह एकता और सहभागिता ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।''

उन्होंने मोमेंटो स्पॉन्सर - डिफू से हीरा देवी, वात्सल्य भोजन के स्पॉन्सर - मैसर्स दानमल सोगानी एंड सन्स (गुवाहाटी) तथा उपहार के स्पॉन्सर - श्री धन कुमारजी एवं संजय कुमारजी कोठारी (गुड़गांव) के योगदान का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए उनके समाजसेवी भाव की सराहना की।

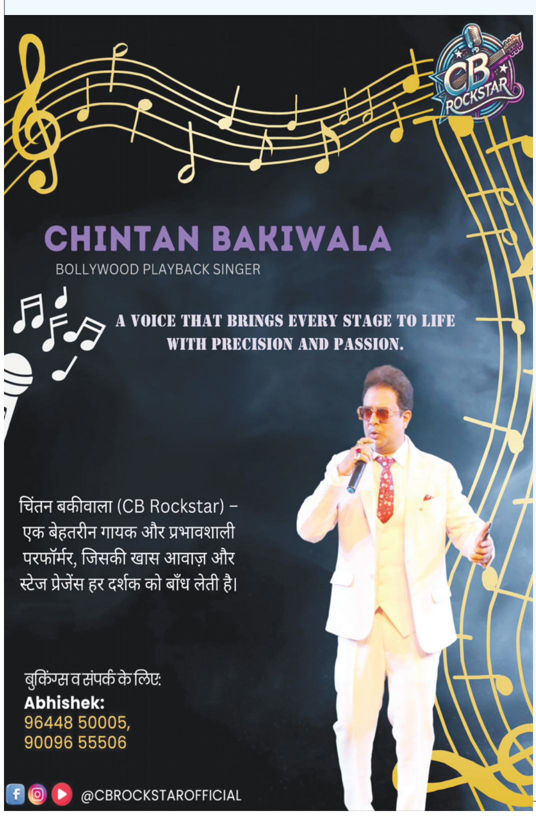

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
सुरेश जैन 'सरल', जबलपुर
मो. 09425412374
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से
कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र.
रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
....
....
....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।